बाल गीत

समर्पण

मोबाईल क्रैश के
जिन कार्यकर्ताओं ने
अपने पसंद के
इन गीतों का
संकलन किया, और
जिन साधारण
राजस्थानी मज़दूरों के
बच्चों की
नन्ही कलम से
इनका चित्रांकन हुआ,
उन सब की ओर से
बेहद प्रेम और
सम्मान के साथ
मीरा महादेवन
की याद में
यह बाल गीत
समर्पित हैं,
जो मोबाईल क्रैश के
अपने इस स्वप्न
और इन गीतों को
साकार रूप में
देखने के लिये
आज
हम लोगों के बीच
नहीं हैं।

बाल गीत

देखो राखी वाला आया
अच्छी-अच्छी राखी लाया।
रंग बिरंगी राखी ले लो
राखी का त्यौहार है आया।

त्यौहार

चम-चम-चम-चम चमक रही है
राखी रंग रंगीली।
लाल, हरी, बैंगनी, सुनहरी
धानी, पीली, नीली।
मैं भी जल्दी चलूँ, कमल
दीदी राखी बाँधेगी।
खूब मिठाई-फल देंगी
मुझ से रुपये पायेंगी॥

आई दिवाली आई दिवाली
बच्चों को हर्षाने वाली।
घर-घर में होती है सफाई,
माता बनाये मेवा-मिठाई।
बच्चों के मन भाने वाली,
आई दिवाली आई दिवाली।
घर-घर में हैं दीप जलाते,
पट-पटा-पट चले पटाखे।
झर - झर - झर - झर,
छूटे फुलझड़ियाँ और अनार
आई दिवाली आई दिवाली,
बच्चों को हर्षाने वाली।

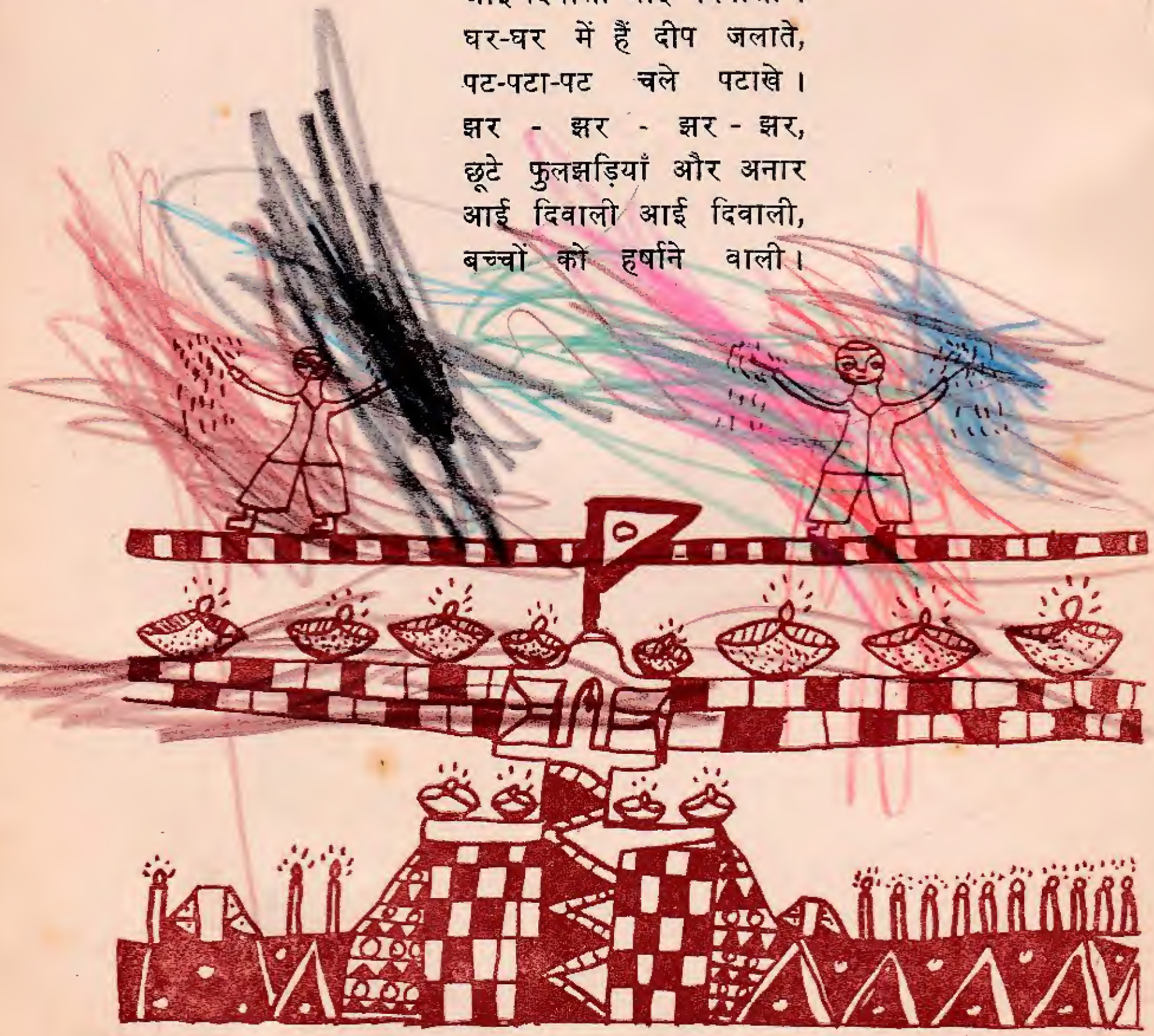

भैया खूब दिवाली आयी ।
छम-छम करती चम-चम करती ।
खूब दिवाली आई ।
भैया खूब दिवाली आयी ।
गोवरधन की चाची लगती ।
अन्नकूट की भाई ।
भैया खूब दिवाली आयी ।
दीये जलाओ मौज उड़ाओ ।
खूब खिलौने लाओ ।
खील बताशों की वर्षा कर
मुट्ठी भर - भर खाओ ।
रुपया लाई पैसा लाई,
लाई नयी मिठाई ।
एक नहीं भई, दो नहीं भई
थाली भर - भर लाई
भैया खूब दिवाली आयी ।

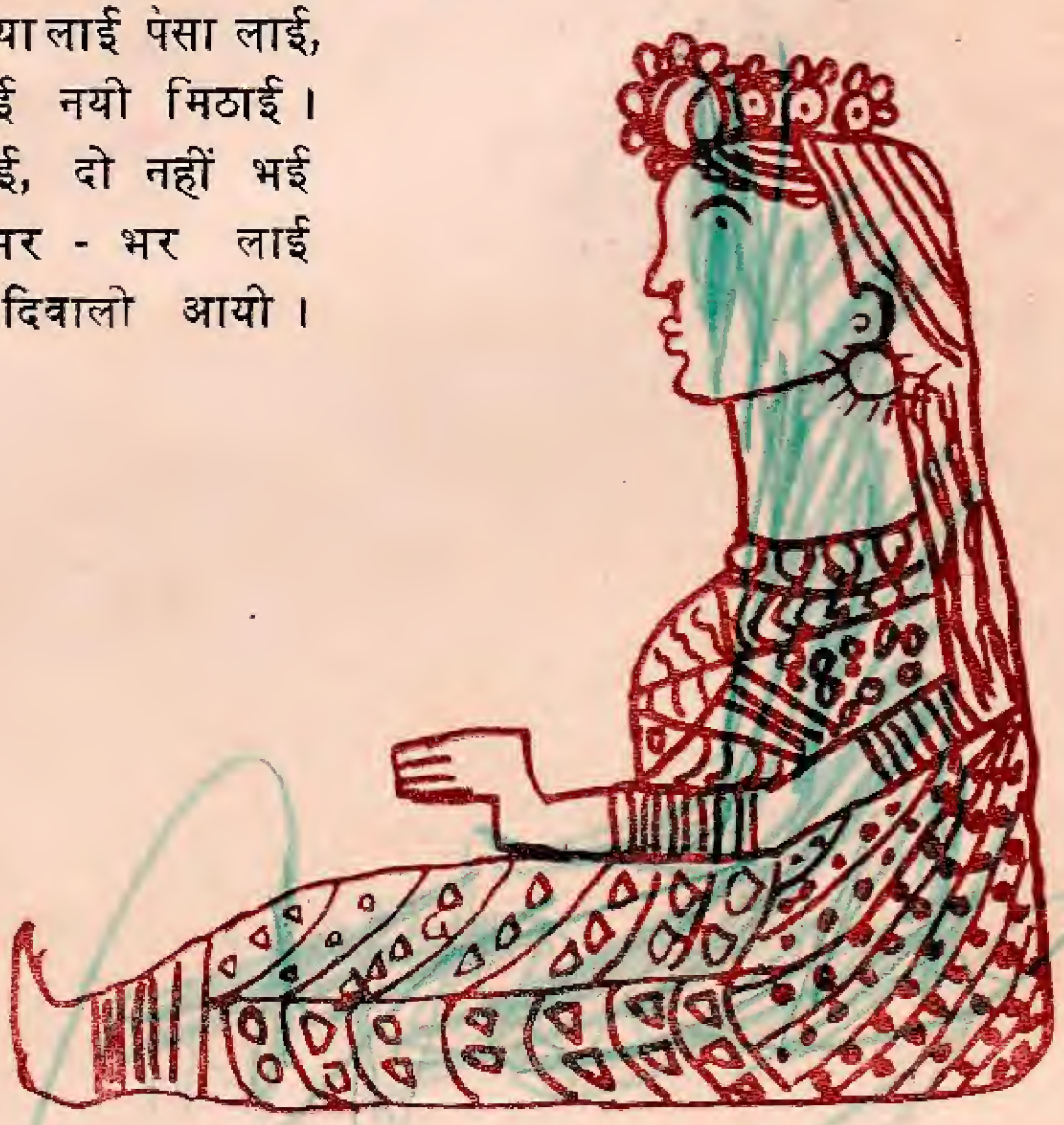

धूम मचाती होली आई, ले सतरंगी रंग।
रामू शामू शीला आओ चलो करे हुड़दंग॥
फागुन की अल्हड़ मस्ती में, हँस-हँस भरे गुलाल।
टेसू घोले सबको घेरे, करदे मुखड़े लाल।
दादाजी की पगड़ी रंग दे, मामाजी के बाल।
चाचाजी का धोती कुर्ता, भाभी जी के गाल।
जो भी घर में छुपकर बैठे, खूब करेंगे तंग।
धूम मचाती होली आई, ले सतरंगी रंग॥

होली आई, होली आई।
रंग बिरंगी होली आई॥
धूम मचाती होली आई।
बच्चों की यह टोली आई॥
हाथ में पिचकारी लाई।
अबीर गुलाल उड़ाती आई॥
शोर मचाती टोली आई।
होली आई होली आई॥
होली है भई होली है।
हम बच्चों की टोली है॥
खेलेंगे हम खेलेंगे।
प्रेम से होली खेलेंगे॥

झूला झूले कृष्ण कन्हैया
बच्चे झूला झुलाये जी।
झूले में रेशम की डोरी
बच्चे झूला झुलाये जी।
झूले में मोतियन की माला
बच्चे झूला झुलाये जी।
झूला झूले कृष्ण कन्हैया
बच्चे झूला झुलाये जी।

आया बसन्त हो ! छाया बसन्त।
पीली-पीली सरसों है फूली
अमुवा की डाल पै कोयल बोली
बागों में हरियाली छायी
फूलों में रस सुराही
आया बसन्त हो ! छाया बसन्त॥

गुड़िया और खिलौने

प्यारी-प्यारी सखियों कल सब आना।
गुड़िया का है ब्याह रचाना।
चार साल की होने आयी
कुछ दिन पहले हुई सगाई।
प्यारी-प्यारी सखियों कल सब आना।
कल दर्जी कपड़े लाया था
जेवर वाला भी आया था।
नौ बजकर पैंतीस मिनट पर
आयेगी बारात सड़क पर।
प्यारी-प्यारी सखियाँ कल सब आना।
बिमला का है गुड्डा सुन्दर
अच्छा है घर अच्छा है वर
प्यारी प्यारी सखियों, कल सब आना।

गुड़िया मेरी रानी है
बन्नो बड़ी सयानी है।
गुन-गुन गाना गाती है
ताथई नाच दिखाती है।
हँसती रहती है दिन रात
करती है वह मीठी बात।
ठुमक-ठुमक कर आती है
कंधे पर चढ़ जाती है।

शाहबाद की गुड़िया के हाथ नहीं हैं
गुड़िया कैसे खाएगी ?
बंदर के हाथ लगाकर ऐसे ऐसे खाएगी।
शाहबाद की गुड़िया के कान नहीं हैं
गुड़िया कैसे सुनेगी ?
खरगोश के कान लगाकर ऐसे ऐसे सुनेगी।
शाहबाद की गुड़िया के पैर नहीं हैं
गुड़िया कैसे चलेगी ?
हाथी के पैर लगाकर ऐसे ऐसे चलेगी।
शाहबाद की गुड़िया के आँख नहीं हैं
गुड़िया कैसे देखेगी ?
बिल्ली की आँख लगाकर ऐसे ऐसे देखेगी।

डम डम डम डम ढोल बजाकर
ब्याह रचाया गुड़िया का
नये मुकुट पर सेहरा बाँधे
गुड्डा आया गुड़िया का
धन्नो आई, शन्नो आई
गुड्डे की अम्मा भी आई
फूलों के जेवर भी लाई
इन्दर आया, चन्दर आया
सज धज चले बराती रे
घोड़ा नाचे, हाथी नाचे
नाचे घोड़ा हाथी रे
पंडित आया, पंडित आया
रस्मे खूब निभाई रे
फेरे डाले, फेरे डाले
गुड़िया हुई पराई रे
ठुमक-ठुमक कर गुड्डा नाचा
गुड़िया भी मुस्काई रे
डम-डम-डम-डम ढोल बजाकर
ब्याह रचाया गुड़िया का।

मैं गुड़िया के कपड़े लायी
लायी गुड्डा गुड़िया
गुड़िया छम-छम नाच दिखाती
कपड़े पहने बढ़िया
लायी गुड्डा गुड़िया।

शादी का बाजा बाजे डम डम डम।
छोटी सी गुड़िया नाचे छम छम छम।
पप्पू की मोटर बोली पों पों पों।
रस्ते के लोग बोले क्यों क्यों क्यों।
पप्पू की अम्मा बोली आओ आओ आओ।
लड्डू बरफी और मिठाई खाओ खाओ-खाओ।

डमरू बजाता आया मदारी, देखो बच्चों आया मदारी
उछलो बच्चों आया मदारी, दौड़ो बच्चों आया मदारी
डमरू बजाता आया मदारी, देखो बच्चों आया मदारी
कंधे पर भी लट्ठ धरा, भालू को भी साथ नचाया
बंदर को भी साथ नचाया, बंदर ही ससुराल चला
रीछ को भी साथ नचाया, बंदर को भी साथ नचाया
डमरू बजाता आया मदारी, देखो बच्चों आया मदारी ।

डाक्टर देखो भली प्रकार
मेरी गुड़िया है बीमार ।
कल था बरसा छम छम पानी
भीगी उसमें गुड़िया रानी ।
गीले कपड़े दिए उतार
फिर भी गुड़िया है बीमार ।
उसे लगाना थर्मामीटर
ओ हो इतना तेज बुखार ।
सौ से भी ऊपर है चार
देता हूँ मैं इसको पुड़िया ।
डाक्टर ले ली मैंने पुड़िया
ले जाती मैं अपनी गुड़िया ।

मैं लाया हूं कई खिलौने
अजी खिलौने वाला
हाथी घोड़ा भालू बन्दर
सीटी ले लो लाला
अजी खिलौने वाला

एक चिड़िया आती है
चूं चूं गीत सुनाती है।
दो बिल्ली ही बिल्ली हैं
दोनों जाती दिल्ली हैं।
तीन गिलहरी रानी हैं
तीनों पीती पानी हैं।
चार चूहे राजा हैं
मक्खन खाते ताजा हैं।
पाँच यहाँ खरगोश खड़े
लम्बी मूंछें और कान बड़े।
छः लंगूर बड़े शैतान
मारें थप्पड़ खींचें कान।
सात यहाँ पर रीछ अड़े
छोटी दुम और कान खड़े।
आठ यहाँ पर फूल रहे
मस्त हवा में झूल रहे।
नौ मछली ही मछली हैं
अपने घर से निकली हैं।
दस बच्चों ने छेड़ी तान
जय जय प्यारे हिन्दुस्तान।

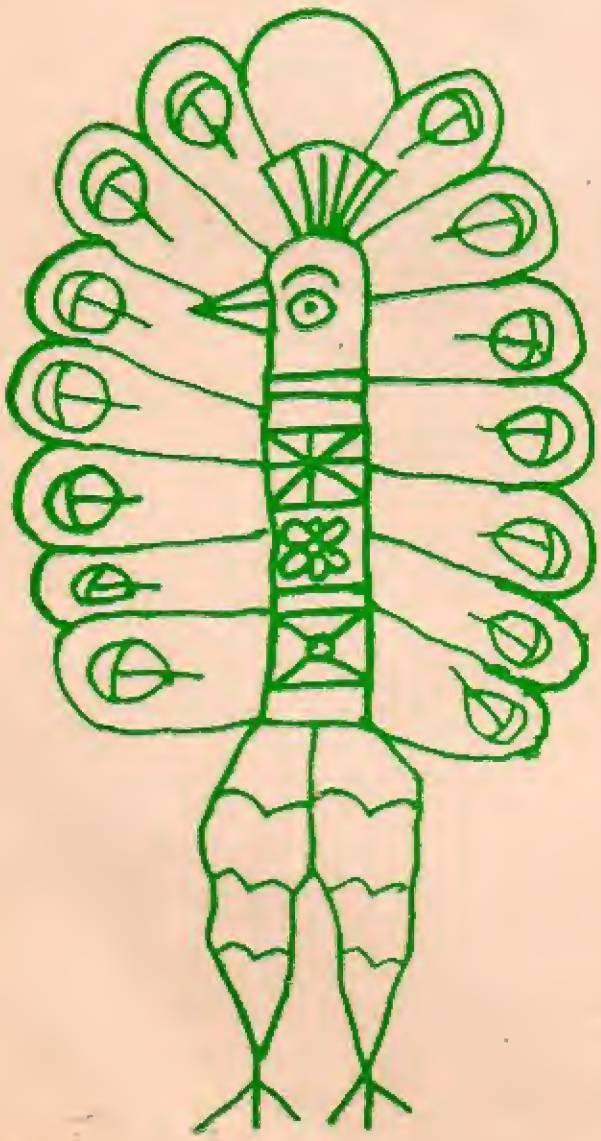

संख्या

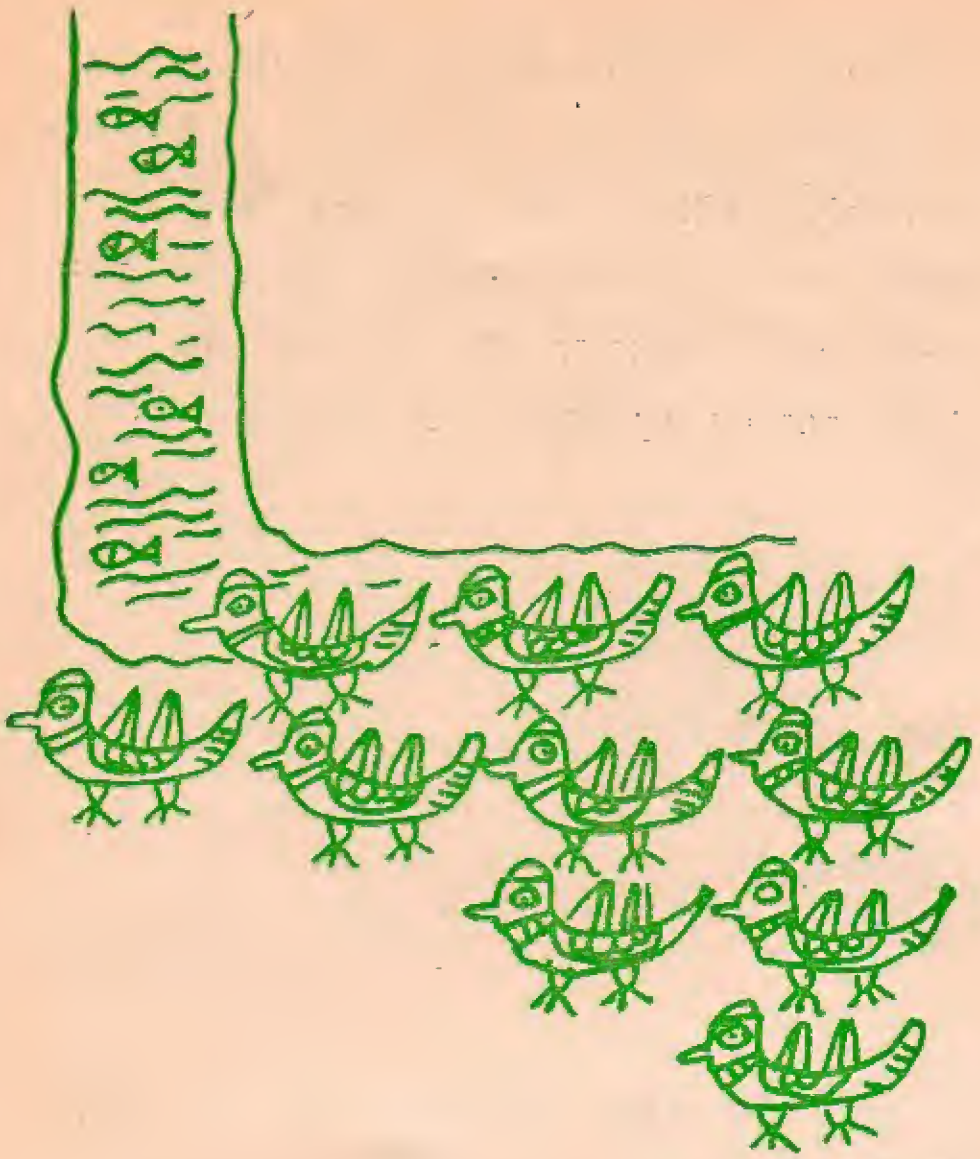

जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
एक नहीं दो नहीं तीन तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
दो नहीं तीन नहीं चार तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
तीन नहीं, चार नहीं, पाँच तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
पाँच नहीं छः नहीं सात तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
छः नहीं सात नहीं आठ तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
सात नहीं आठ नहीं नौ तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।
आठ नहीं नौ नहीं दस तो भी होंगे ।
जमुना के किनारे कितने बुलबुल होंगे ।

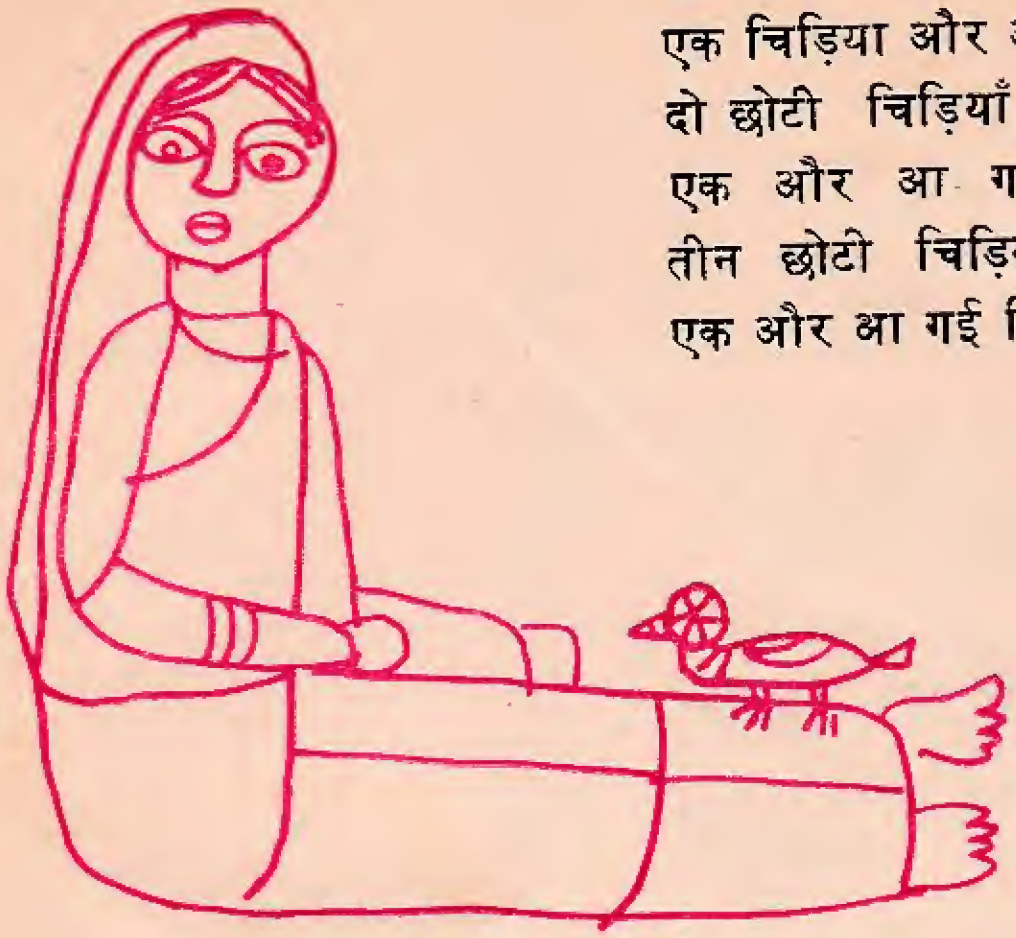

एक छोटी चिड़िया पेड़ पर बैठी थी।
एक चिड़िया और आ गई मिलकर हो गयीं दो
दो छोटी चिड़ियाँ पेड़ पर बैठी थीं।
एक और आ गई मिलकर हो गयी तीन
तीन छोटी चिड़ियाँ पेड़ पर बैठी थीं
एक और आ गई मिलकर हो गयी चार.....

पाँच छोटी चिड़िया खाती थीं अनार
एक उनमें से उड़ गयी बाकी बची चार।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।
चार छोटी चिड़िया बजा रही थीं बीन
एक उनमें से उड़ गयी बाकी बची तीन।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।
तीन छोटी चिड़िया धान रही थीं बो
एक चिड़िया उड़ गयी बाकी बची दो।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।
दो छोटी चिड़िया धूप रही थीं सेक
एक चिड़िया उड़ गयी बच गयी एक।
चिड़िया-चिड़िया उड़ती जा
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गा।

very nice

एक राजा की राजकुमारी
दो दिन से बीमार बिचारी।
तीन महात्मा सुनकर आये
चार दवा की पुड़ियाँ लाये।
पाँच मिनट में गरम कराई
छः घंटे में खाई दवाई।
सातवें दिन आँखें खोली
आठवें दिन रानी से बोली।
नौवें दिन कूद लगाई
दसवें दिन बाजी शहनाई।

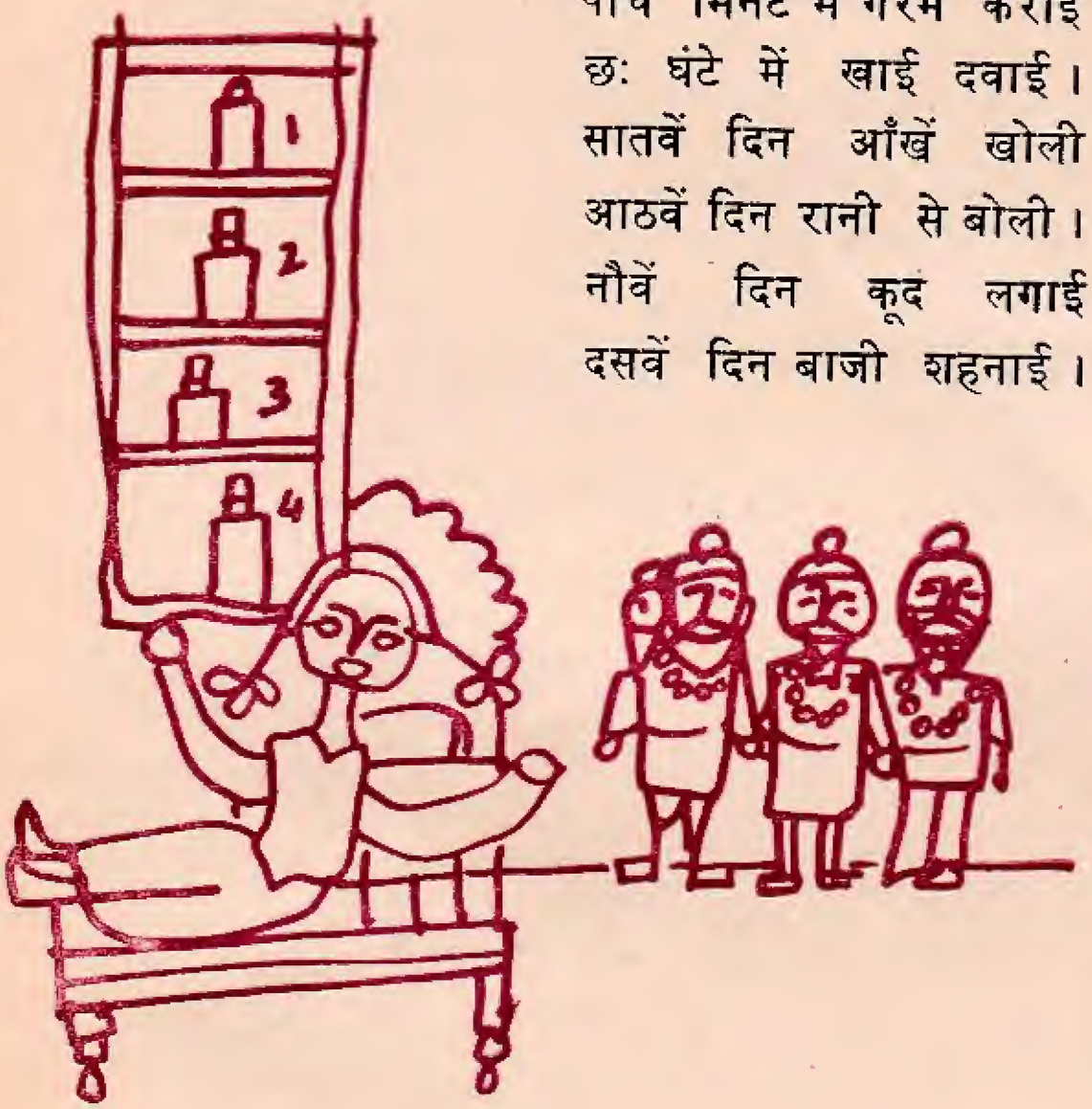

एक, दो, तीन, चार
रानी बैठी अपने द्वार।
पाँच, छः, सात, आठ
बच्चों पढ़ लो अपना पाठ।
गिनती सीखो नौ और दस
आगे करो नमस्ते बस।

मुझे ले चल सिपाही बाजार ही बाजार
पहली दुकान में क्या-क्या मिलता है
सेव, अमरूद, अनार ही अनार
मुझे ले चल सिपाही बाजार ही बाजार।

दूसरी दुकान में क्या-क्या मिलता है
तोप बन्दूक, तलवार ही तलवार
मुझे ले चल सिपाही बाजार ही बाजार।

तीसरी दुकान में क्या-क्या मिलता है
कापी, किताब, अखबार ही अखबार
मुझे ले चल सिपाही बाजार ही बाजार।

चौथी दुकान में क्या-क्या मिलता है
धोती, कुर्ता, सलवार ही सलवार
मुझे ले चल सिपाही बाजार ही बाजार।

अंगुलियाँ लड़ने लगीं आपस में
बहन मेरी क्यों इतराती हो ?
पहली अंगुली यूँ उठ बोली
मैं इसीलिए इतराती हूँ।
सब बहनों में छोटी कहलाती
इसीलिए इतराती हूँ।
अंगुलियाँ लड़ने लगीं आपस में
बहन मेरी क्यों इतराती हो ?
दूसरी अंगुली यूँ उठ बोली
मैं इसीलिए इतराती हूँ।
गंगा जमुना का जल छिड़कती
इसीलिए इतराती हूँ।
अंगुलियाँ लड़ने लगीं आपस में
बहन मेरी क्यों इतराती हो ?
तीसरी अंगुली यूँ उठ बोली
मैं इसीलिए इतराती हूँ।
सब बहनों में बड़ी कहलाती
इसीलिए इतराती हूँ।
अंगुलियाँ लड़ने लगीं आपस में
बहन मेरी क्यों इतराती हो ?
चौथी अंगुली यूँ उठ बोली
मैं इसीलिए इतराती हूँ।
भटकों को रास्ता मैं दिखाती
इसीलिए इतराती हूँ।
अंगुलियाँ लड़ने लगीं आपस में
बहन मेरी क्यों इतराती हो ?
पाँचवा अंगूठा यूँ उठ बोला
मैं इसीलिए इतराता हूँ।
सब बहनों में हुई लड़ाई
मैं अंगूठा दिखाता हूँ।

बतख रानी, बतख रानी
डूबके देखो कितना पानी
डूबके देखो कितना पानी
उजले-उजले पंख हमारे
पीली-पीली चोंच हमारी।
क्योंक-क्योंक मैं बोलती हूँ
बच्चों को भा जाती हूँ।

काली सी बिल्ली
मोटी सी बिल्ली
जाने को वह बैठी दिल्ली।
दिल्ली जाकर चढ़ी मीनार
ऊपर से झाँका बाजार।
ऊपर से उतरकर नीचे आई
लूट-लूट के खाई मिठाई।
इतने में आया मोटा हलवाई
उसने की भई खूब पिटाई।

पशु-पक्षी

चिड़िया बोली हुआ सवेरा
भाग चला अब घोर अंधेरा।
छाई पूर्व दिशा में लाली
फैल गई नभ में उजियाली
चटक-चटक कर कलियाँ फूटी
फूलों पर मधुमक्खी झूली।

वह देखो आया खरगोश
लम्बे कान और छोटी दुम
मटक मटक कर चलते तुम
तुम्हारी नकल करेंगे हम
हम क्यों रहें किसी से कम।

हाथी आता झूमके
धरती मिट्टी चूमके ।
कान हिलाता आता है
गन्ने पत्ते खाता है ।
देखो इसके लम्बे दाँत
मुँह के अन्दर दूसरी पाँत ।
आँखें इसकी छोटी छोटी
सूँड़ तो इसकी काफी मोटी ।

भालूमल ने कोट सिलाया
मगर हो गया छोटा ।
बन्दर खाँ दरजी के पीछे
दौड़ा लेकर सोटा ।
बन्दर बोला माफ़ करो जी
ठीक लिया था माप ।
मेरा क्या है दोष, भला रे भई,
मोटे हो गए आप ।

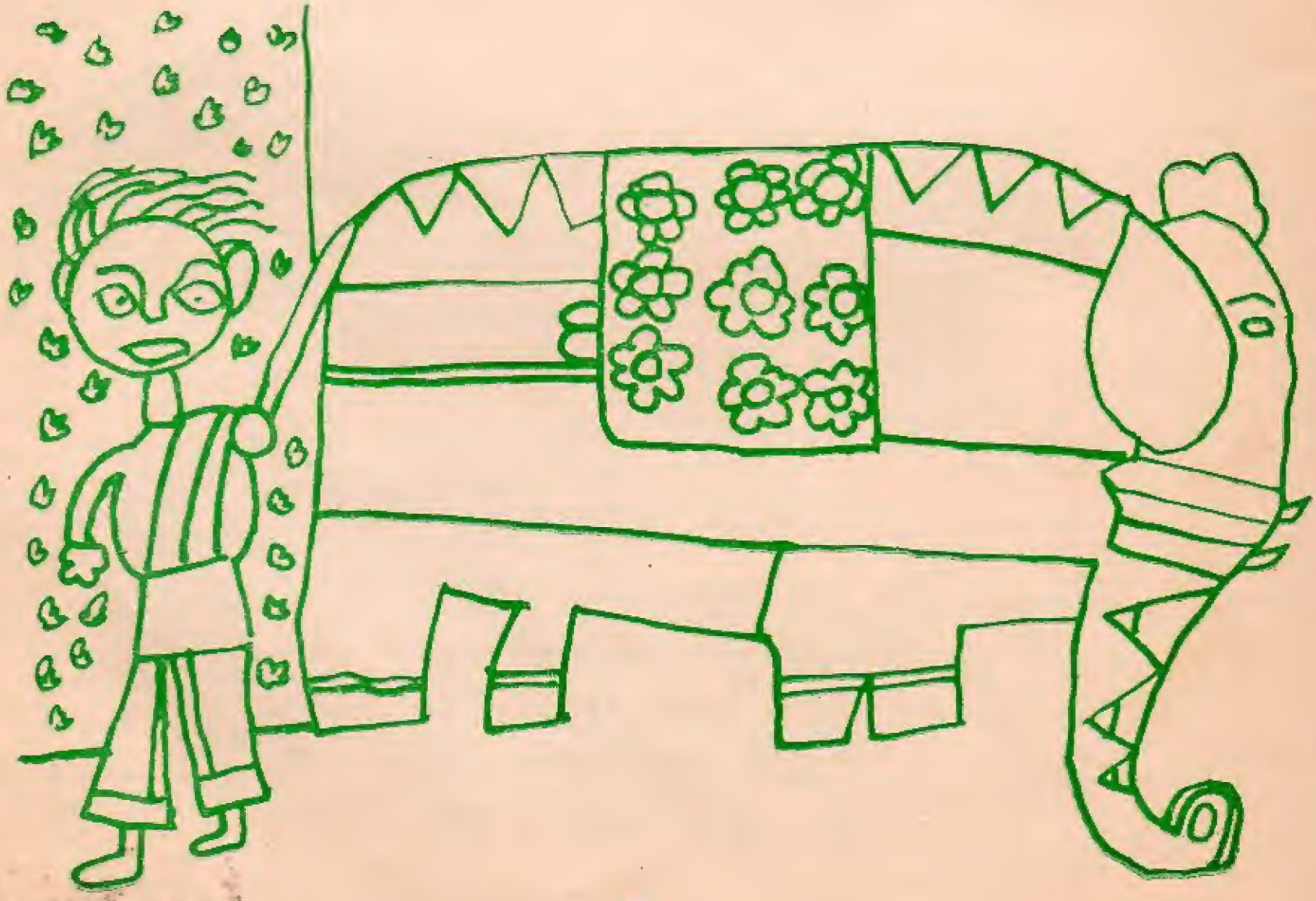

चिड़िया मुझे बना दे राम
छोटे पंख लगा दे राम
बागों में मैं जाऊँगी
बैठ डाल पर गाऊँगी ।
इतना सा तू करदे काम
चिड़िया मुझे बना दे राम ।

Good

मछली जल की है रानी
जीवन उसका है पानी ।
हाथ लगाओ डर जायेगी
बाहर निकालो मर जाएगी।

भालू बाबा भालू बाबा
बोला आज किधर है धावा ?
महक शहद की क्या आई है
आँख झपक न पाई है ।

तोता हूं मैं तोता हूँ
हरे रंग का तोता हूँ
चोंच बनी है मेरी लाल
सुन्दर-सुन्दर मेरी चाल
डाल-डाल पर जाता हूँ
खट्टे-मिट्ठे फल खाता हूँ
कण्डी फूटी निकले बोल
मीठे-मीठे मेरे बोल

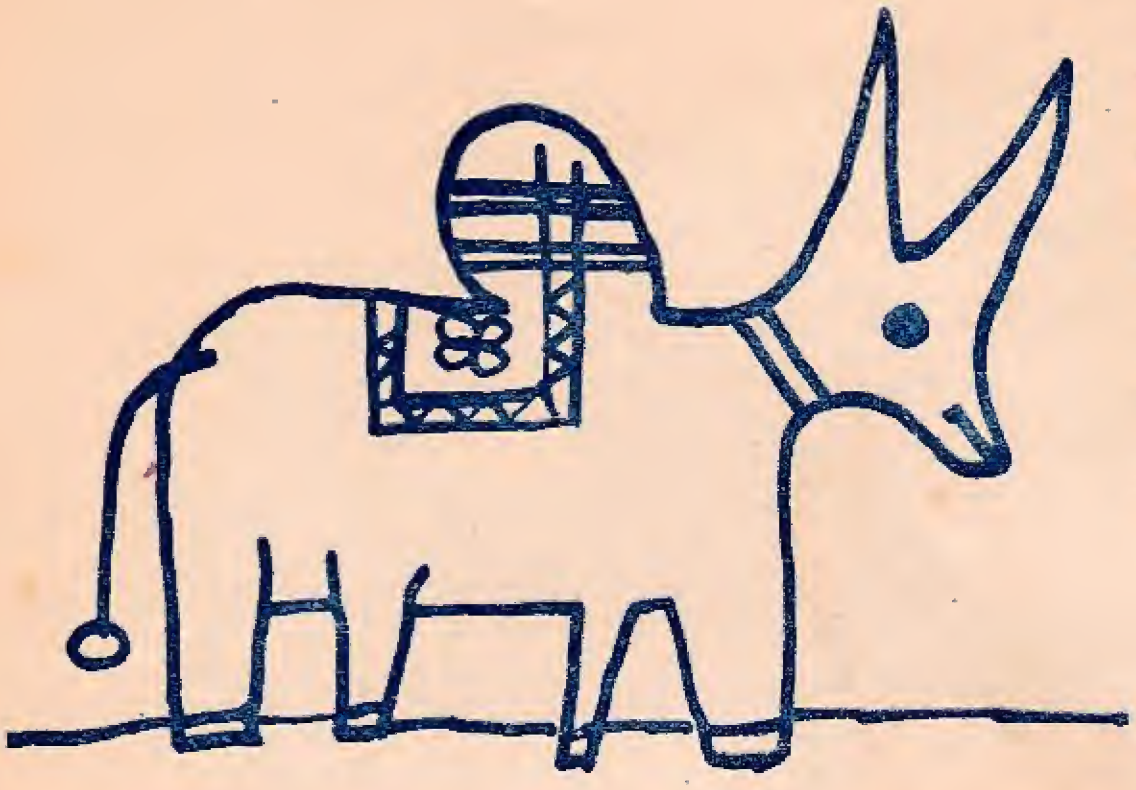

गाय, गाय दूध दे ।
दूध, दूध दही दे ।
दही, दही लस्सी दे ।
लस्सी, लस्सी मक्खन दे ।
मक्खन, मक्खन घी दे ।
गाय, गाय दूध दे ।

चूँ-चूँ करती चिड़िया आई ।
चुन-चुनकर वह दाना लाई ॥
बच्चे भी मुँह खोल रहे हैं ।
चूँ - चूँ - चूँ - चूँ बोल रहे हैं ॥
बड़े जतन से पाल रही है ।
दिन भर उसका काम यही है ॥
बच्चे थोड़ा बढ़ जायेंगे ।
फर से वे सब उड़ जायेंगे ॥

बिल्ली बोली म्याऊँ म्याऊँ। चुहिया रानी घर में आऊँ।
देखो लाई हूँ मैं दाना। तुम सब खाकर मौज उड़ाना।
गाकर लोरी तुम्हें सुनाऊँ। थपकी देकर वहीं सुलाऊँ।
चुहिया बोली ना-ना-ना-ना। मेरी बिल में तुम मत आना।

देखो नटखट लड़के आये ।
पकड़ किसी का घोड़ा लाये ।
घोड़े पर हो गये सवार ।
घोड़ा चला कदम दो चार ।
नटखट लड़के थे शैतान ।
लगा दिये दो कोड़े तान ।
भागा घोड़ा तोड़ लगाम ।
नटखट लड़के गिरे धड़ाम ।
जैसा था उनका शुभ नाम ।
वैसे ही थे उनके काम ।

मक्खी आई, मक्खी आई
पंजों में मैला भर लाई ।
छोटे - छोटे पंख हिलाती
इधर-उधर मैला फैलाती ।
भिन-भिन-भिन-भिन गाना गाती
बैठ नाक पर हमें सताती ।
मक्खी है बीमार बनाती
इसीलिए यह हमें न भाती ।

जंगल का है राजा शेर
नहीं खाता संतरे बेर
दिन भर करता खूब शिकार
रात को सोता पाँव पसार ।

कोयल मीठे गाने गाती
कोयल सबके मन को भाती
तुम भी कोयल सी बन जाओ
सबको मीठे बोल सुनाओ ।

बैठा था मैं नदी किनारे
दूर कहीं से चिड़िया आई
प्यार भरा जब हाथ बढ़ाया
उड़ी फुदक कर, हाथ न आई।

मेरा पिल्ला बढ़ा छब्बीला
कहा मानता नहीं हठिल्ला
चाहे उससे नाच नचा लो
चाहे उससे हाथ मिलाओ।

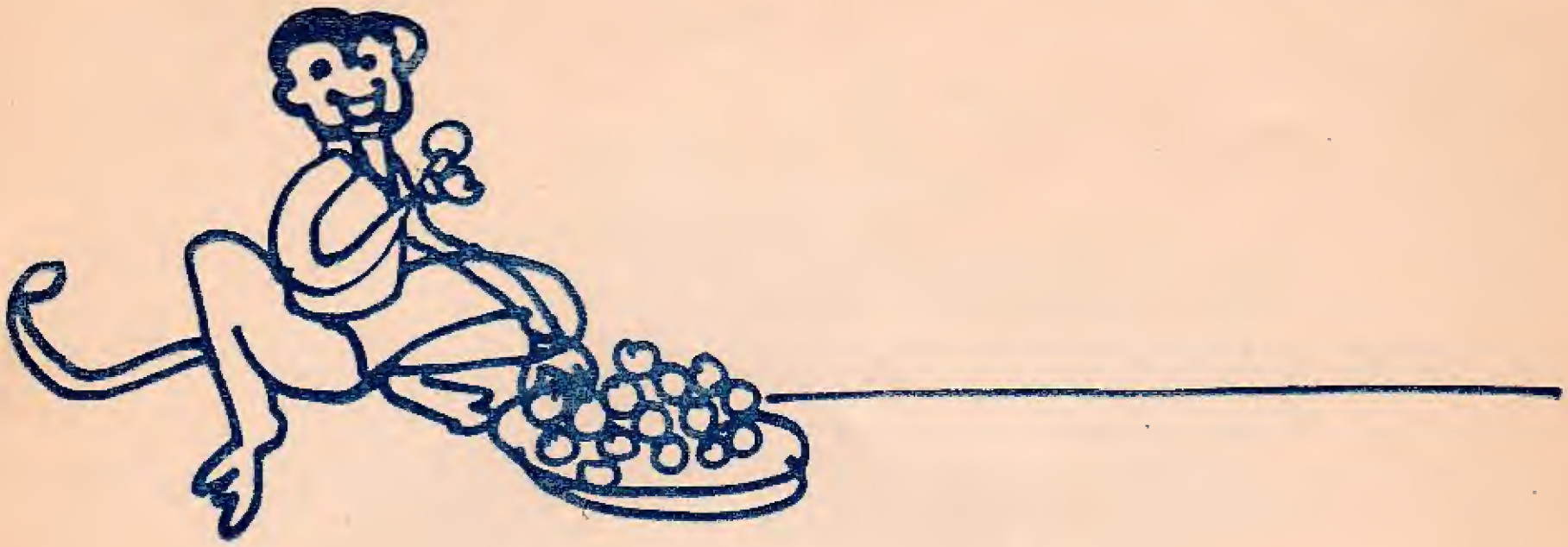

बन्दर मामा पहन पजामा
दावत खाने आए हैं।
सिर पर टोपी, मोजा जूती
पहन बहुत इतराए हैं।
रसगुल्ले लख बोले लूँ चख
रखा मुँह में गप से।
नरम नरम था बड़ा गरम था
जीभ जल गई लप से।
बन्दर मामा पहन पजामा
आँसू भर-भर रोए
झल्लाए थे घर पर आए
बिस्तर पर जा सोए।

मैं तो सो रही थी
मुझे मुर्गों ने जगाया
बोला कुकड़ूँ कूँ कूँ कूँ।
मैं तो सो रही थी
मुझे बिल्ली ने जगाया
बोली म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ।
मैं तो सो रही थी
मुझे मोटर ने जगाया।
बोली पों पों पों
मैं तो सो रही थी
मुझे अम्मा ने जगाया।
बोली उठ उठ उठ।

छोटा सा एक बन्दर
नाचे घर के अन्दर
गोल - गोल रसगुल्ला
खाये मस्त कलन्दर
लड्डू का है किला बनाया
बरफी का दरवाजा
पेड़े की वह तोप चलाये
नाचे बन्दर राजा ।

चाचा मेरे आयेंगे
सुग्गा मेरा लायेंगे
मेरा सुग्गा बोलेगा
टें टें टें टें गायेगा
मीठी चूरी खायेगा
मीठा गाना गायेगा ।

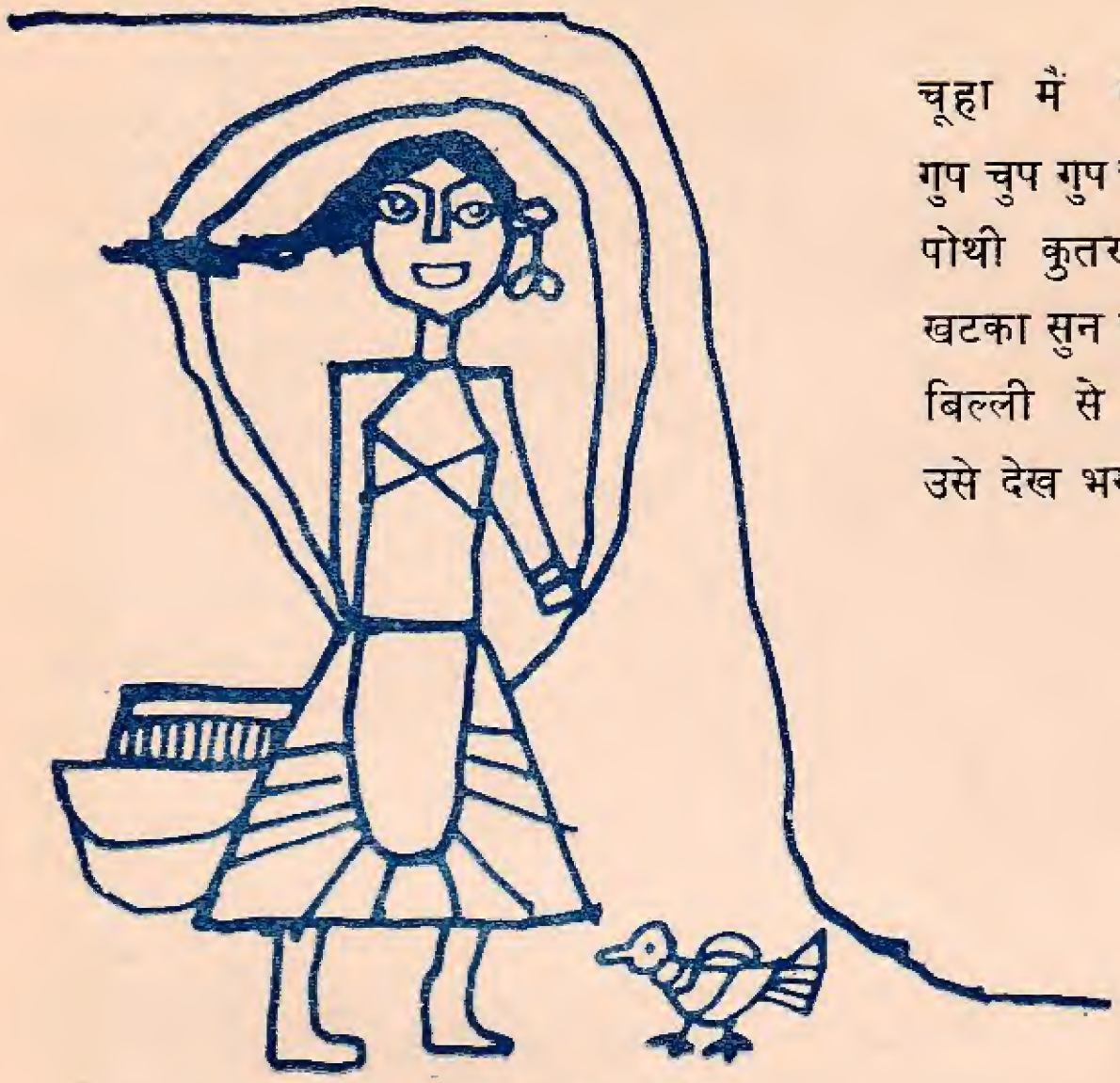

चूहा मैं कहलाता हूँ
गुप चुप गुप चुप आता हूँ
पोथी कुतरा करता हूँ
खटका सुन डर जाता हूँ
बिल्ली से घबराता हूँ
उसे देख भग जाता हूँ।

बड़े सवेरे चिड़िया बोली
चूँ चूँ चूँ चूँ चूँ चूँ चूँ
छत पर बैठा मुर्गा बोला
कुकड़ूँ कूँ कूँ कुकड़ूँ कूँ
मैंने उठकर ली अंगड़ाई
बिल्ली मौसी यूँ चिल्लाई
मैंने दाँतों को चमकाया
माँ ने तब हलवा बनवाया
दूध पिया तब हलवा खाया
भागा सरपट पहुंचा झटपट।

धम्मक-धम्मक आता हाथी
धम्मक-धम्मक जाता हाथी
अपनी सूँड उठाता हाथी
अपनी सूँड गिराता हाथी
अपनी पूँछ हिलाता हाथो
धम्मक धम्मक आता हाथी

जब पानी में जाता हाथी
भर-भर सूँड नहाता हाथी
कितने केले खाता हाथी
यह तो नहीं बताता हाथी
धम्मक-धम्मक आता हाथी
धम्मक-धम्मक जाता हाथी

मेरी सारी बतखें
तैर रही हैं पानी में
छोटी पूँछ हिलाये, चोंच डालें पानी में
मेरी सारी बतखें ।

चल मेरे घोड़े चल्लम चल
हिन हिन करके नहीं मचल ।
चल मेरे घोड़े चल्लम चल
आगे चल भई पीछे चल ।
दायें चल और बायें चल
चल मेरे घोड़े चल्लम चल ।
हिन-हिन करके नहीं मचल
पूरब चल औ पश्चिम चल ।
उत्तर चल औ दक्षिण चल
चल मेरे घोड़े चल्लम चल ।

छम-छम छम-छम बरसा पानी,
बिल से निकली चुहिया रानी ।
एक बिलौटा दिया दिखाई,
हाय बहुत चूहिया घबराई ।

बिल्ला बोला चूहिया रानी,
क्यों होती तुमको हैरानी ।
अपना ब्याह रचाऊँगा,
दुल्हन तुम्हें बनाऊँगा ।

शरमाकर चुहिया मुस्काई,
तब बिल में बाजी शहनाई ।
छम-छम छम-छम चूहिया नाचो,
बिल्ला-बिल्ली बने बराती ।

मैंने चूहा पकड़ लिया, भई ! बड़े ज़ोर से पकड़ लिया
चूहे जी घबराते हैं, छुटने को ललचाते हैं
तूने मेरी पोथी कुतरी, माँ ने मुझको डाँटा था
चूहे तेरे नटखटपन से, पड़ा गाल पर चाँटा था ।

जब हम कहते आ-आ-आ
सभी कबूतर दौड़े आते ।
फुट-फुट-फुट-फुट दाना खाते
खाकर वे फुर से उड़ जाते ।
आ कबूतर आ जाओ
दाना तिनका खा जाओ ।

उड़ा कबूतर फर फर फर ।
बैठा जाकर उस छत पर ।
बोल रहा है गुटरूगूं ।
गुटरूगूं भई गुटरूगूं ।

एक बिल्ली हमारी ।
वो तो बैठी बिचारी ।
लगे सभी को प्यारी ।
अजी वाह, वाह, वाह ।
चूहे झट से पकड़ती है।
वो कुत्ते से डरती है ।
अजी वाह, वाह, वाह ।

चिड़िया रानी चिड़िया रानी ।
सचमुच तू है बड़ी सयानी ।
कितना सुन्दर घर है तेरा ।
कोई न बनाए ऐसा डेरा ।

अरी गिलहरी अरी गिलहरी
बोली तेरी सबसे न्यारी ।
मुझे एक फल दे तू डाल
मेरा तुझसे यही सवाल ।
फल पाते ही घर जाऊँगी
रोटी मक्खन ले आऊँगी ।
बदला तू फल का पायेगी
मन ही मन खुश हो जायेगी ।

भालू आया भालू आया
नाच कूद कर खेल दिखाया ।
चर्खा काता बीन बजाई
कर सलाम फिर पैसा पाया ।

यातायात

यह बैलों की गाड़ी देखो
पहिये सबसे भारी।
भैया हाँक रहा है टिक-टिक
जीजी करे सवारी।
इसमें भूसा चारा लादे
गेहूँ भर-भर लायें।
भैया कूदे जीजी नाचे
दोनों उधम मचायें।
यह बैलों की सदा सहेली
है किसान की प्यारी।
गाँव-गाँव में घूम रही है
यह बैलों की गाड़ी।

मोटर चलाओ भई मोटर चलाओ
लाल बत्ती देखो तो मोटर को रोको।
हरी बत्ती देखो तो मोटर चलाओ
मोटर चलाओ भई मोटर चलाओ।
साईकिल चलाओ भई साईकिल चलाओ
लाल बत्ती देखो तो साईकिल को रोको।
हरी बत्ती देखो तो साईकिल चलाओ
साईकिल चलाओ भई साईकिल चलाओ।

कलकत्ते से आई रेल
आओ भाई खेलें खेल।
राजू सीटी बजायेगा
मोहन झंडी दिखायेगा।
बड़ा मजा तब आयेगा
कलकत्ते से आई रेल।
गीता गाना गायेगी
मीरा ताली बजायेगी।
बाबू नाच दिखायेगा
बड़ा मजा फिर आयेगा।

आओ आओ खेलें खेल
सब मिलकर बन जाओ रेल ।
दो मिलकर इंजन बन जाओ
सीटी देकर रेल चलाओ ।
झंडी हरी दिखाऊँगा मैं
सीटी तुरन्त बजाऊँगा मैं ।
छुक-छुक, छुक-छुक चलती रेल
आगे बढ़ती जाती रेल ।

रेलगाड़ी मेरा नाम ।
छुक-छुक करना मेरा काम ।।
आओ बच्चो जल्दी आओ ।
गाड़ी चलने वाली है ।।
अगला स्टेशन आयेगा ।
इंजन खाना खायेगा ।।
हम भी पूरी खाएँगे ।
छुक-छुक, छुक-छुक जाएँगे ।।
रेलगाड़ी मेरा नाम ।
छुक-छुक करना मेरा काम ।।
छिक-छिक, छुक-छुक

सड़क बनी है लम्बी-चौड़ी
उस पर जाती मोटर दौड़ी
सब बच्चे पटरी पर जाओ
बीच सड़क पर कभी न आओ
आओगे तो दब जाओगे
चोट लगेगी पछताओगे ।

लाल पीली मेरी मोटर।
पों पों करती मेरी मोटर।
हम तो दिल्ली जाएँगे ।
दीदी को ले जायेंगे ।
लालकिला और जन्तर-मन्तर।
कुतुब-मीनार दिखाएँगे ।
लाल पीली मेरी मोटर।
पों पों करती मेरी मोटर।
हम तो दिल्ली जायेंगे ।
दीदी को ले जायेंगे ।
बिड़ला मंदिर, जामा मस्जिद।
चिड़ियाघर भी जायेंगे।

एक छोटी किश्ती मेरे पास
मैंने बनवाई, नीली रंगवाई
और पानी में तैराई ।
एक मेंढ़क बैठा पानी में
उसने देखा, मुझको घूरा
और कूदा पानी में ।
एक छोटी किश्ती मेरे पास
मैंने बनवाई, नीली रंगवाई
और पानी में तैराई ।

रामू बचना, शामू बचना, मोहन देखो आगे।
आगे-आगे घोड़ा चलता ताँगा पीछे भागे।
दादा-दादी आगे बैठे, चाचा-चाची पीछे।
पीठ मिलाकर बातें करते छोटे-छोटे बच्चे।

छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक-छुक
चलते चलते जाती रुक
बच्चों की यह रेल है
बच्चों का यह खेल है
बच्चों का यह मेल है
चलती फिरती रेल है
चलते-चलते जाती रुक
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक-छुक
नहीं कोयला खाती है
इसे मिठाई भाती है
नहीं छोड़ती यह धुआँ
मुड़ जाती आये कुआँ
चलते-चलते जाती रुक
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक-छुक
इसमें नहीं लगा है इंजन
सीटी देता है जगमोहन
ले लो टिकट और चढ़ जाओ
रेल सफर का मजा उड़ाओ
चलते-चलते जाती रुक
छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक-छुक

फल-सब्जियाँ

जामुन हैं क्या काली-काली,
लटक रही है डाली-डाली।
तुम ठहरो मैं ऊपर जाऊँ
डाल पकड़ कर खूब हिलाऊँ।
टपक पड़ेगी टप टप टप
बीनो बच्चो झटपट झट
चलो चलें हम नदी किनारे
जामुन धोकर खाएँ सारे।

आलू का तो किला बनाया
मूली का दरवाजा
शकरकन्द की तोप बनाई
लड़े गोंगुलू राजा
कद्दू काट मृदंग बनाया
नींबू काट मंजीरा
सात तुरईयाँ मंगल गाएँ
नाच दिखाए खीरा।

आओ बाबू आओ आओ
मेरे काले जामुन खाओ
झटपट पैसे इधर बढ़ाओ
ले लो दोनों गप कर जाओ
एक बार इनको खाओगे
तो तुम बार-बार आओगे
इनको नहीं भूल पाओगे
जीभ चटाचट चटकाओगे।

बड़े जायके वाले जामुन
कैसे काले-काले जामुन
देखो ये भौराले जामुन
झट घुल जाने वाले जामुन
जामुन नहीं फरेंदे हैं ये
खिले हुए गुलगेंदे हैं ये
पीले नहीं मगर हैं काले
मन को बहुत लुभाने वाले।

मैं तरकारी लेकर आयी
मैं तरकारी वाली।
ले लो मूली, ले लो आलू
ले लो गाजर काली।
मैं तरकारी वाली
मैं तरकारी वाली।

मीठे-मीठे फल लायी हूँ
सेव संतरे केले।
इनको मिलजुल कर खाना तुम
खाना नहीं अकेले
सेव संतरे केले।

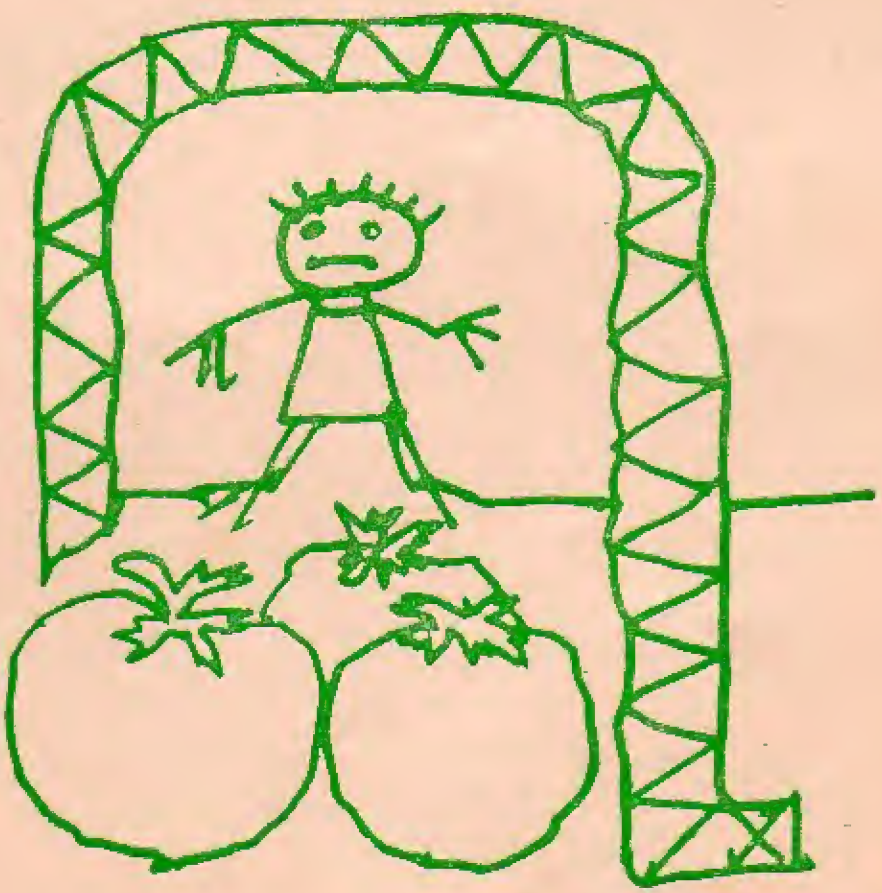

कहानियाँ

एक बुढ़िया ने बोया दाना, गाजर का था पौध लगाना।
थोड़ी-थोड़ी घास बढ़ी, गाजर हाथों हाथ बढ़ी
सोचा तोड़ इसे मैं लाऊँ, हलवा गरमागरम बनाऊँ॥
खींची चोटी ज़ोर लगाया, नहीं बना कुछ नहीं बना
काम हमारा नहीं बना, और बुलाओ एक जना
अब बूढ़ी का बूढ़ा आया, खींची चोटी ज़ोर लगाया।
नहीं बना कुछ नहीं बना, और बुलाओ एक जना
फिर बूढ़ी का बेटा आया, खींची चोटी ज़ोर लगाया।
नहीं बना कुछ नहीं बना, और बुलाओ एक जना
जीत हमारी हुई भली, गाजर हाथों हाथ मिली।
तोड़ इसे अब घर ले जायें, हलवा गरमागरम बनवाएँ॥

एक कौवा प्यासा था
घड़े में पानी थोड़ा था
कौवा लाया कंकड़
घड़े में डाले कंकड़
पानी आया ऊपर
कौवा बैठा घड़ पर
कौवे ने पिया पानी
खत्म हुई कहानी।

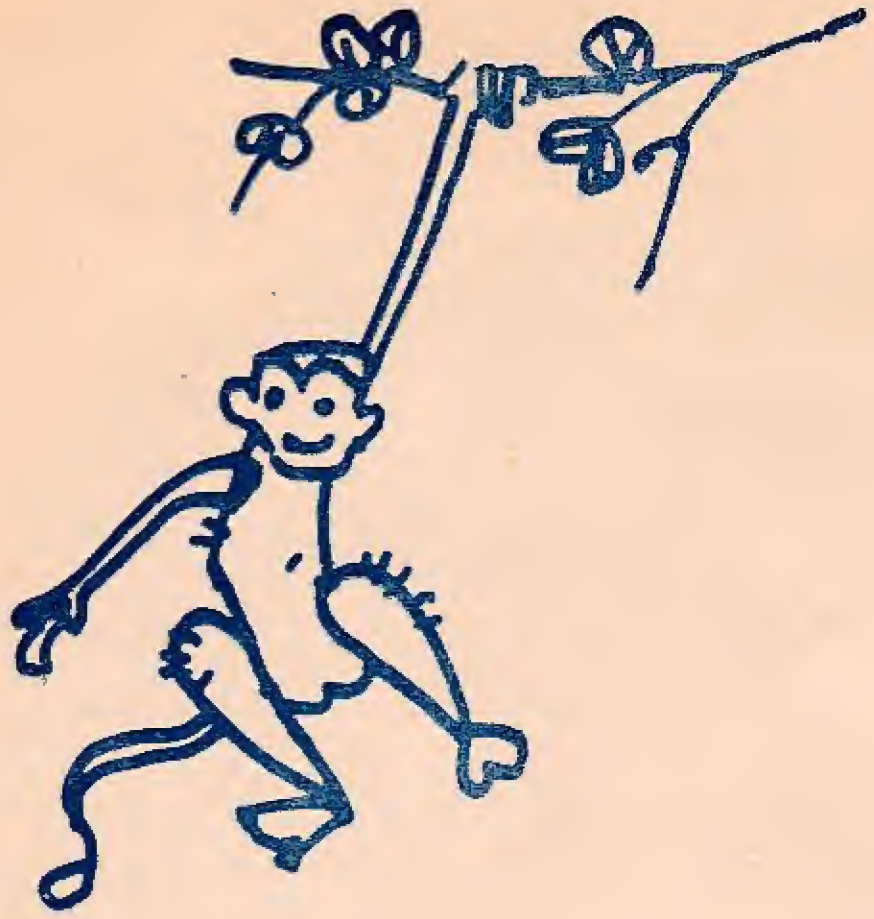

एक डाल पर बैठा बंदर
भीग रहा पानी के अंदर
थर-थर-थर-थर काँप रहा था
कहाँ छिपूँ मैं झाँक रहा था।
बन्दर मामा, बोली चिड़िया
नहीं मिली है छतरी बढ़िया
बना नहीं घर भीग रहे हो
आछीं आछीं छींक रहे हो।
सुन मामा को गुस्सा आया
चिड़िया का घर तोड़ गिराया
चूँ चूँ चूँ चूँ चिड़िया रोई
बैठ डाल पर वह भी सोई।

एक बुढ़िया ने चिड़िया पाली
नन्ही नन्ही भोली भाली
एक दिन बुढ़िया भूखी आई
जल्दी - जल्दी खीर पकाई
मुंह हाथ धो खाने बैठी
चिड़िया गीत सुनाने बैठी
बुढ़िया ने सबकुछ खा डाला
चिड़िया को भूखा रख डाला
जब चिड़िया पिंजरे में आई
भूख से उसको नींद न आई
सुबह हुई जब मुर्गा बोला
तब बुढ़िया ने पिंजरा खोला
प्यार से जब उसको पुचकारा
चिड़िया ने चोंचों-से मारा
बुढ़िया भागी घर को आई
मुट्ठी भरकर दाना लाई
जब चिड़िया ने दाना खाया
तब बुढ़िया को गीत सुनाया।

देश भक्ति

पी पी पी पी डर डर डम
नन्हें मुन्ने सैनिक हम।
छोटी सी है फौज हमारी
पर उसमें है ताकत भारी।
बड़ी-बड़ी फौजें झुक जाती
जब ये अपना जोर दिखाती।
पी पी पी पी डर डर डम
नन्हें मुन्ने सैनिक हम।

डम-डम-डम-डम आगे बढ़ती
हम बच्चों की टोली है।
गूँज रही हैं चारों ओर से
इंकलाब की बोली है।
डम-डम-डम-डम आगे बढ़ती
हम बच्चों की टोली है।
हमें न भाये घोड़ा हाथी
हमें चाहिए फौजी साथी।
कन्धे पे बन्दूक लिए हम
पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
डम-डम-डम-डम आगे बढ़ती
हम बच्चों की टोली है।

अम्मा मेरे लिए मंगादे, छोटी धोती खादी की।
जिसे पहनकर नकल करूँगा, प्यारे बापू गाँधी की।
आँखों में चश्मा पहनूँगा, कमर घड़ी लटकाऊँगा।
लिए हाथ में एक लकुटिया, धीरे-धीरे आऊँगा।
बीच सभा में बैठूँगा मैं, अच्छी बात सुनाने को।
सारे लोग चले आएंगे, मेरा दर्शन पाने को।

तीन रंग का अपना झंडा
इसे तिरंगा कहते हैं।
हम भारत के बच्चे मिलकर
यह झंडा फहराते हैं।
मन में हैं हम खुशी मनाते
इसका गाना गाते हैं।
इस झंडे पर बलि-बलि जाते
इसको शीश झुकाते हैं।

हम छोटे-छोटे बच्चे हैं,
हम प्यारे-प्यारे बच्चे हैं।
देश की आँखों के तारे हैं,
भारत माँ के दुलारे हैं।
बच्चे प्यारे-प्यारे हम,
बच्चे छोटे-छोटे हम।

झंडा मुझे बना देना
तीन रंगों से सजा देना।
लाल किले पर जाऊँगा
जयहिन्द जयहिन्द गाऊँगा।

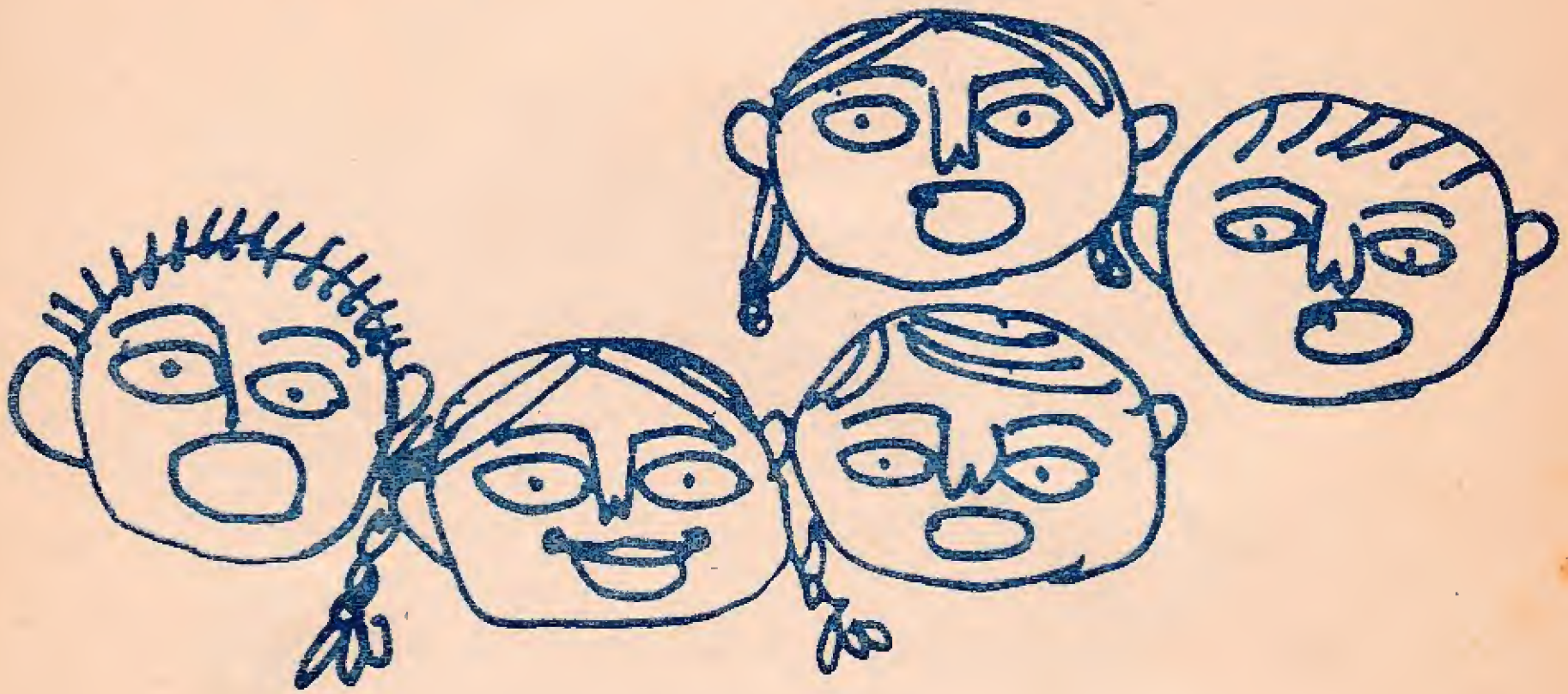

आओ बच्चों दिल्ली देखो
हम को इस पर गर्व है
लाल किले पर लहराता है
झंडा कितनी शान से
यही तिरंगा झंडा मुझको
प्यारा अपनी जान से
चलो राष्ट्रपति भवन देख लो
जहाँ स्वर्ग शरमा रहा
गौरव गीत नये भारत के
बच्चा-बच्चा गा रहा
आओ बच्चों दिल्ली देखो
हम को इस पर गर्व है

देखो तुम दिल्ली को देखो
उस ऊँची मीनार से
जो न झुकी है, जो न गिरी है
कभी किसी की हार से
जंतर मंतर देख चुके तुम
देखो भारत द्वार को
मिलती है रोशनी जहाँ से
नयी नयी संसार को
आओ बच्चों दिल्ली देखो
हम सब को इस पर गर्व है।

ठक-ठक ठक-ठक करे ठठेरा
थाली ग्लास बनाता है
उस थाली में खाना मेरा
शाम सवेरे आता है ।

देखो एक डाकिया आया
साथ में अपने थैला लाया
खाकी टोपी खाकी वर्दी
आकर उसने चिट्ठी फेंकी
संदेशा शादी का लाया
शादी पर हम भी जायेंगे
खूब मिठाई खायेंगे ।

सामान्य

मैं तो एक सिपाही हूँ
ऐसी बन्दूक चलाता हूँ
दुश्मन को मार भगाता हूँ।
मैं डाक्टर भी बन जाता हूँ
बीमारों की सेवा करता हूँ
सबके घावों को भरता हूँ।
मैं तो एक शिकारी हूँ
वन में रोज ही जाता हूँ
शेर मार कर लाता हूँ।
मैं तो एक माली हूँ
अच्छे फूल उगाता हूँ
सुन्दर बाग बनाता हूँ।
मैं घुड़सवार बन जाता हूँ
मैदानों में जाता हूँ
घुड़ दौड़ खूब लगाता हूँ।
मैं सब्जी बेचने वाला हूँ
आलू गोभी देता हूँ
घर घर फल बेचता हूँ।
केला चीकू और अनार
खाओ खाओ आई बहार।

आया सपेरा, उसने बीन बजाई
खोल पिटारी बैठा सड़क पर
राजू छोटे, तुम भी आओ,
आओ चुन्नु, आओ मुन्नु,
कमला, बिमला, रानी आओ,
आओ मुन्नी, तुम भी बैठो।

क्या तुम जानते हो, जानते हो
किसान ने कैसे बोया, कैसे बोया, कैसे बोया, कैसे बोया अनाज रे ?
किसान ने ऐसे बोया, ऐसे बोया, ऐसे बोया, ऐसे बोया अनाज रे।
क्या तुम जानते हो, जानते हो
किसान ने कैसे सींचा, कैसे सींचा कैस सींचा, कैसे सींचा अनाज रे ?
किसान ने ऐसे सींचा, ऐसे सींचा, ऐसे सींचा, ऐसे सींचा अनाज रे।
क्या तुम जानते हो, जानते हो
किसान ने कैसे काटा, कैसे काटा, कैसे काटा, कैसे काटा अनाज रे ?
किसान ने ऐसे काटा, ऐसे काटा, ऐसे काटा, ऐसे काटा अनाज रे।
क्या तुम जानते हो, जानते हो
किसान ने कैसे पोया, कैसे पोया, कैसे पोया, कैसे पोया अनाज रे ?
किसान ने ऐसे पोया, ऐसे पोया, ऐसे पोया, ऐसे पोया अनाज रे।
क्या तुम जानते हो, जानते हो
किसान ने कैसे खाया, कैसे खाया, कैसे खाया, कैसे खाया अनाज रे ?
किसान ने ऐसे खाया, ऐसे खाया, ऐसे खाया, ऐसे खाया अनाज रे।
क्या तुम जानते हो, जानते हो
किसान ने कैसे नाचा, कैसे नाचा, कैसे नाचा, कैसे नाचा रे ?
किसान ने ऐसे नाचा, ऐसे नाचा, ऐसे नाचा, ऐसे नाचा रे।

चंदा के गाँव में
तारों को छाँव में
हम सैर करने जाएँगे
राकेट पर चढ़कर जाएँगे।
दाँया हाथ आगे करो
बाँया हाथ आगे करो
थोड़ा - थोड़ा इसे हिलाओ
अब तुम घूमते घूमते जाओ।
दाँया पैर बाहर करो
बाँया पैर बाहर करो
थोड़ा-थोड़ा इसे हिलाओ
अब तुम घूमते घूमते जाओ।
चंदा के गाँव में
तारों की छाँव में

गर्मी आई - गर्मी आई।
यह तो आम रसीले लाई।
और संग में छुट्टी लाई।
धूल गगन आँगन में छाई।
ठंडी मीठी लगे मलाई।
कुल्फी रबड़ी वाली खायी।
मुनिया दो-दो बार नहाई।
गर्मी आई - गर्मी आई।

पानी बरसा झमाझम
छाता लेकर निकले हम।
पैर फिसल गया गिर गए धम,
ऊपर छाता नीचे हम।

मैं हूँ टिम-टिम करता तारा
आसमान का राजदुलारा।
किरणें मुझको दूध पिलाती
हाथ पकड़ चलना सिखलाती।
चन्दा मामा गाते गाना
छुप जाते जब सूरज मामा।
कितना सुन्दर कितना प्यारा
मैं हूं टिम-टिम करता तारा।

सूरज जब छिप जाता है
चाँद निकलकर आता है
शबनम पड़ने लगती है
तारे गीत सुनाते हैं
हम मिलकर नाचा करते हैं
फूलों का मेह बरसाते हैं
हम हँसते हैं और गाते हैं
खुशियाँ खूब मनाते हैं
दो-दो परियाँ हिल-मिलकर
हँस-हँस कर, खिल-खिलकर
आगे - पीछे दायें - बायें
मिलकर नाचा करते हैं

मैं एक छोटी सी रानी।
मैं पूजा करूँगी
पुजारिन बनूँगी।
एक छोटा सा मंदिर बनाकर।
उसके अन्दर जाऊँगी
एक छोटा सा थाल सजाकर
पूजा का सामान लगाऊँगी।
मैं पूजा करूँगी
पुजारिन बनूँगी।

खुली सड़क पर जरा टहल कर
लाला जी ने केला खाया।
केला खा कर मुँह बिचका कर
छड़ी उठाकर, तोंद बढ़ाकर
उसका छिलका वहीं गिराया।
लाला जी ने कदम उठाया
कदम बढ़ाकर जैसे रखा
पाँव तले इक छिलका आया।
भरी सड़क पर लाला फिसले
उल्ट-पुल्ट कर गिरे धड़ाम।
छड़ी छिटक गई
तोंद पिचक गई
घर जा तन को सेकूंगा
छिलका कभी न फेकूंगा।

हमने तीन चीजें देखीं, बाबा, तीन चीजें देखीं।
एक बाग में था कद्दू
कद्दू पर बैठा था डड्डू
डड्डू खा रहा था लड्डू
कद्दू, डड्डू, लड्डू ।
हमने तीन चीजें देखीं, बाबा, तीन चीजें देखीं।
एक बाग में थी एक लकड़ी
लकड़ी पर बैठी थी मकड़ी
मकड़ी खा रही थी ककड़ी
लकड़ी, मकड़ी, ककड़ी ।
हमने तीन चीजें देखीं, बाबा, तीन चीजें देखीं।
एक बाग में थी कुछ बालू
बालू पर बैठा था भालू
भालू खा रहा था आलू
बालू, भालू, आलू ।
हमने तीन चीजें देखी, बाबा, तीन चीजें देखीं।

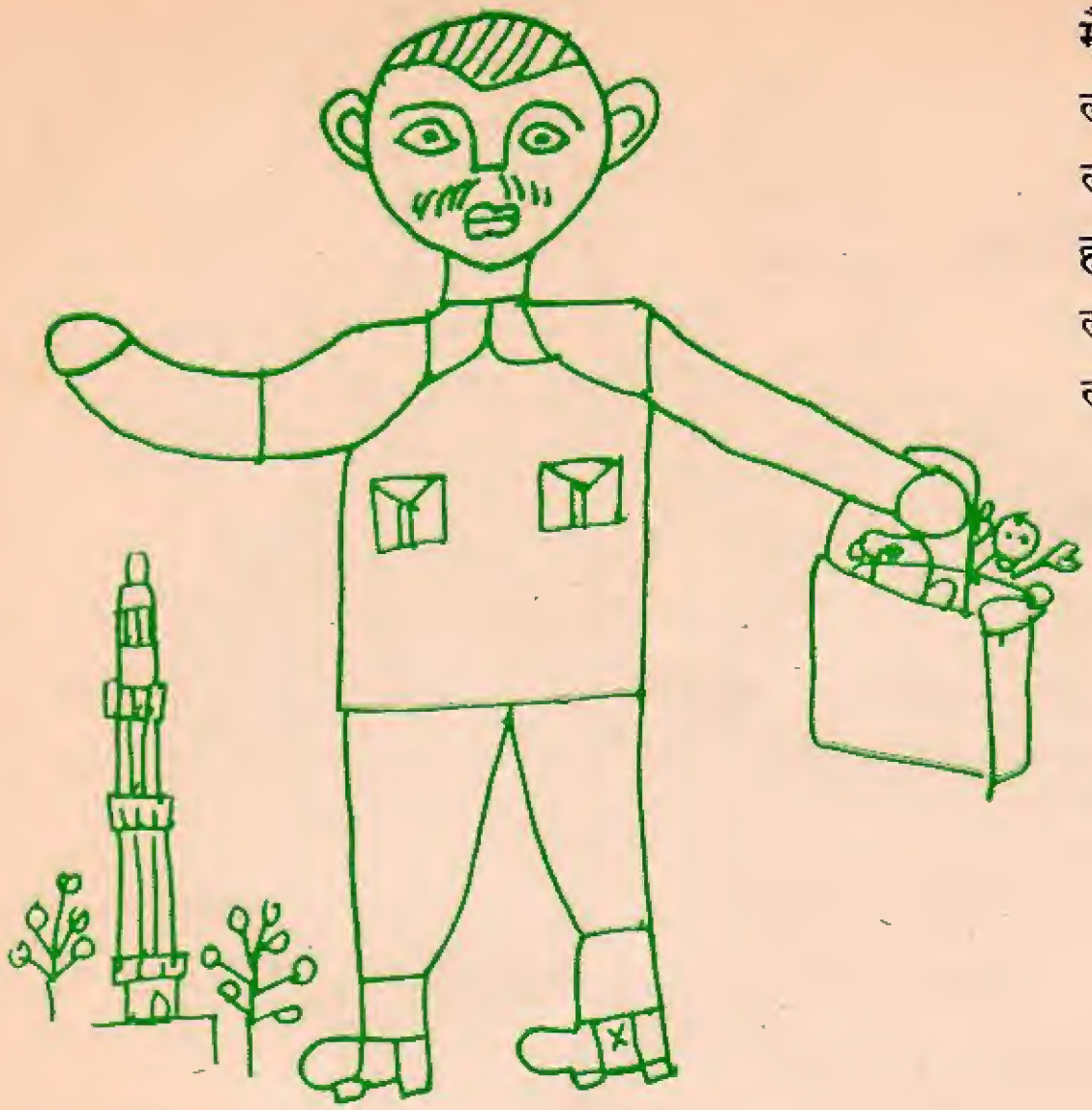

मैं गुब्बारे लेकर आया
लो मेरे गुब्बारे
लाल - बैंगनी - नीले - पीले
हरे-गुलाबी प्यारे-प्यारे
लो मेरे गुब्बारे
लो मेरे गुब्बारे ।

मामाजी दिल्ली से आए ।
देखो क्या-क्या चीजें लाए ।।
लाए इक नन्हीं सी गुड़िया ।
गुड्डा भी छोटा सा बढ़िया ।।
गुड़िया नाचे, गुड्डा खाए ।
मामा जी दिल्ली से आए ।।
लाए बिल्ली गोरी-गोरी ।
जैसे चंदा चाँद चकोरी ।।
म्याऊँ-म्याऊँ शोर मचाये ।
मामा जी दिल्ली से आए ।।
लाए कुत्ता काला काला ।
भों-भों-भों चिल्लाने वाला ।।
प्यार करो तो पूँछ हिलाए ।
मामा जी दिल्ली से आए ।।

ओ चुन्नु ओ मुन्नु
ओ दुन्नी टाल रे।
आज मेरी गुड़िया
चली है ससुराल रे।
बाजा बाजे बैंड बाजे
और बाजे शहनाई रे।
पंडित बोले जंतर-मंतर
पैसा माँगे नाई रे।

मेरी माता बड़ी निराली
मुझको देख बजाती ताली
आंगन में दौड़ाती मुझको
हँसती और हंसाती मुझको
जाती जहाँ वहाँ ले जाती
नये-नये कपड़े पहनाती
करती रहती आँख मिचौनी
मेरी माता बड़ी निराली।

नानी जी लो सुनो कहानी
एक था राजा एक थी रानी।
उस राजा के बेटे चार
उड़ना घोड़ा चढ़े सवार।

चुन्नू मुन्नू चम्पा भोला
कन्धे से लटकाये झोला।
साथ-साथ चलते हैं ऐसे
मानो लिए पालकी जैसे।
दूर गाँव से पढ़ने आते
पढ़ते-पढ़ते थक-थक जाते।
पर किसान के बालक हैं वे
थकते नहीं, नहीं घबराते।
मेहनत करके वे हैं पढ़ते
लिखते पढ़ते आगे बढ़ते।

टन-टन-टन-टन टेलीफोन
हेलो बोल रहा है कौन
यह है मामा जी का फोन।
मामाजी तुम जल्दी आना
गोल-गोल रसगुल्ले लाना
जिनको खाकर पढ़ने जाना।

उमड़-घुमड़ कर दूध बिलोये,
जाटनी का छोरा रोये।
रोता है तो रोने दो,
हमको दूध बिलोने दो।

चुन्नु मुन्नु गए बाजार,
लड्डू लाए हैं दो चार।
लाते-लाते हो गए पट्ट,
बिल्ली कर गयी लड्डू चट।

चुन्नु मुन्नु थे दो भाई
रसगुल्ले पर हुई लड़ाई
चुन्नु बोला मैं खाऊँगा
मुन्नु बोला मैं खाऊँगा
झगड़ा सुनकर अम्मा आई
दोनों को दो चपत लगाई
आधा तू ले चुन्नु बेटा
आधा तू ले मुन्नु बेटा
ऐसा झगड़ा कभी न करना
आपस में मिलजुल कर रहना।

चुन्नु भैया रोते क्यों हो ?
सुन्दर आँखें खोते क्यों हो ?
प्यारी दीदी आयेंगी
दिल्ली को ले जायेंगी ।
जब हम दिल्ली जायेंगे
लौट कभी न आयेंगे ।
राजघाट को जाएँगे
कुतुब पर भी चढ़ जाएँगे ।

मेरी दीदी आशा
लाई एक बताशा
जभी बताशा फोड़ा
उसमें से निकला घोड़ा
घोड़ा सरपट भागा
मैं भी झटपट जागा
घोड़े को जा पकड़ा
दोनों हाथों से जकड़ा
ऊपर कूद लगाई
पीं पीं बीन बजाई

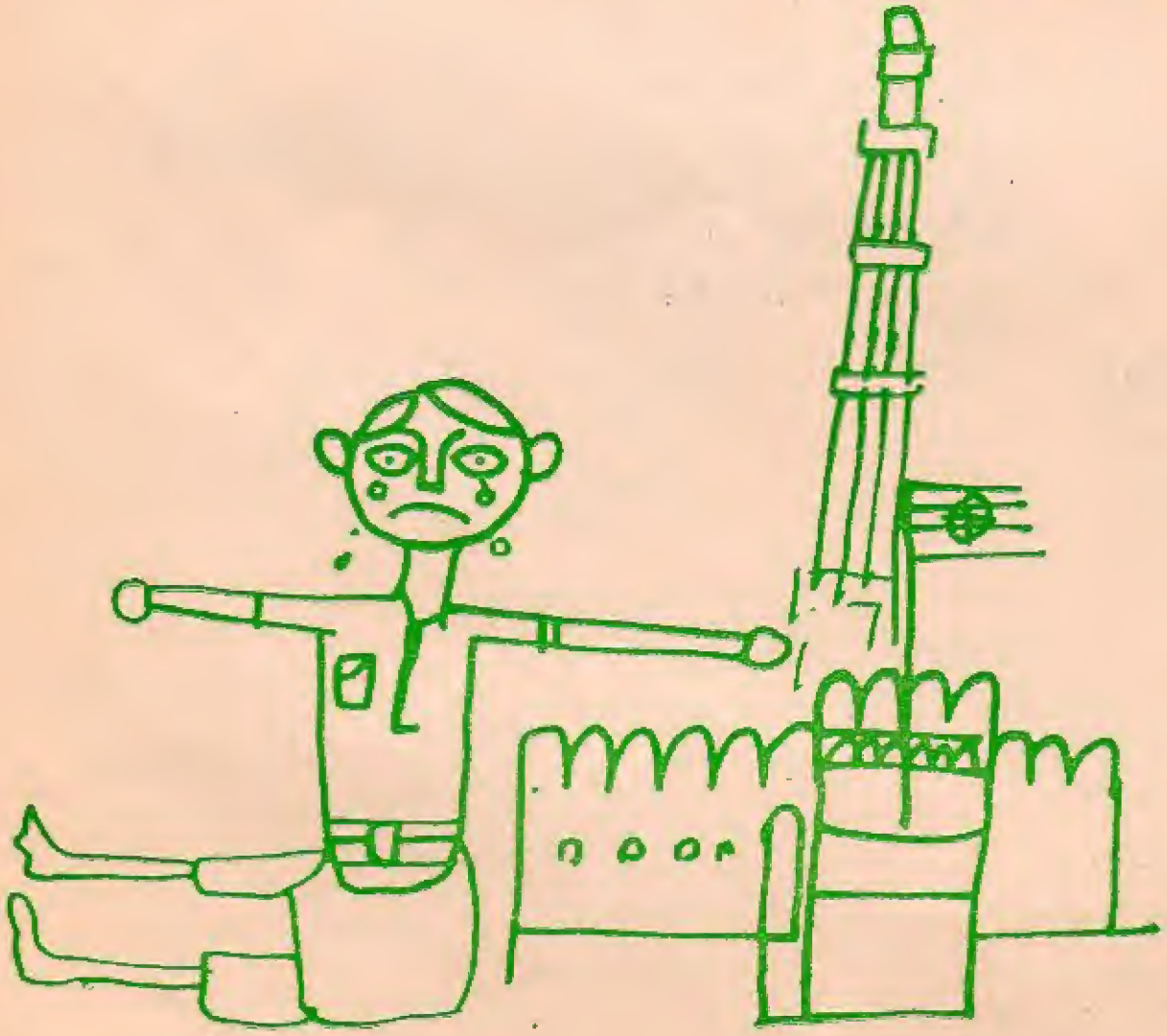

खेल देखो खेल,
आओ देखो खेल।
कभी कभी आपस में लड़ते,
ज्यादा रखते मेल,
आओ देखो खेल।

मध्यमा मैं हूँ कहलाती,
तगड़ी, लम्बी, ऊंची,
तर्जनी मैं हूँ कहलाती
सभी इशारे करती
अनामिका मैं हूँ कहलाती,
पहने रहती बड़ी अंगूठी
कनिष्ठिका मैं हूँ कहलाती
सबसे ठहरी छोटी
मैं हूँ मोटा नाटा छोटा
कहते मुझको सभी अंगूठा
हो जाता जब सबसे झगड़ा
हिला हिलाकर उन्हें चिढ़ाता
खेल देखो खेल,
आओ देखो खेल।

साबुन भैया हाथ मिलाओ।
दूर न हमसे भागे जाओ।।
तुमसे मिलकर साफ बनेंगे।
मैल दूर कर काम करेंगे।।
तौलिये भैया तुम भी आओ।
झटपट आकर मुझे सुखाओ।।
दोनों मिलकर साफ बनाओ।
साबुन तौलिये हाथ मिलाओ।।

राम नाम के हीरे मोती
मैं बिखराऊँ गली गली
ढूंढ लो जो कोई ढूंढन चाहे
शोर मचाऊँ गली गली

जिस जिस ने यह मोती लूटे
वे सब मालो माल हुई
दुनिया के जो बने पुजारी
आखिर वह कंगाल हुए

सोने चाँदी मोती वालों
मैं समझाऊँ गली गली
जिसमें ईश्वर भक्ति नहीं
वह कोई इंसान नहीं

किस किस ने कैसे कैसे
उस भगवान को पाया है
मैं समझाऊँ गली गली

लोक-गीत

माटी के मटके तू राम राम बोल।
इक मटके में शरबत घुलता है
दूजे में मिश्री घोल
माटी के मटके तू राम राम बोल।
ऊपर से तू चिकना चुपड़ा
भीतर भरी रे तेरी पोल
माटी के मटके तू राम राम बोल।
जब मटका भगवान घर पहुँचा
तभी खुली रे तेरी पोल
माटी के मटके तू राम राम बोल।

ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे
काली छींट को घाघरो नजारा मारे रे
ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे
सात कली को घाघरो कली कली में घेर
पैर बजारा निसरी कोई दुनिया हो गई लेर
ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे

ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे
जयपुर के बाजार में कोई पड़यो प्रेमली बोर
नीचे झुक उठावती के पड़ी कमर में जोर
ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे
जयपुर के बाजार में कोई चार लुगाइयाँ जाये
दो गोरी दो सांवरी दो-दो फुलका खाये
ढोला ढोल मंजीरा बाजे रे

गम में राजा गम में, गम गम में जान गवाँ दूंगी
जो मेरी सासू राजी बोले रोटी खूब बना दूंगी
जो मो से वो करे लड़ाई, मूसल से धमका दूंगी
गम में राजा गम में, गम गम में जान गँवाँ दूंगी
जो मेरी जेठानी राजी बोले सारा खेत कटा दूंगी
जो मो से वो करे लड़ाई खड़ी में आग लगा दूंगी
गम में राजा गम में, गम गम में जान गँवाँ दूंगी
जो मेरा देवर राजी बोले छोटी बहन बिया दूंगी
जो मोसे वो करे लड़ाई फेरों से उठवा दूंगी
गम में राजा गम में, गम गम में जान गँवाँ दूंगी
जो मेरी नन्दी राजी बोले तीयर जेवर दे दूंगी
जो मो से वो करे लड़ाई नागड़ी ही भिजवा दूंगी
गम में राजा गम में, गम गम में जान गँवाँ दूंगी

अरि मेरो छोटो सो भरतार, ससुर ने पढ़ने भेजो री
अरि वो पढ़ गया चार क्लास पुलिस में भर्ती हो गयो री
अरि वो तो दिन में उड़ायो जहाज रात में रेल चलायो री
मेरो छोटो सो भरतार, ससुर ने पढ़ने भेजो री

जी का जंजाल मुआँ बाजरा लाया
जब इस बाजरे को कूटन बैठी
उड़-उड़ जाये मुआँ बाजरा
हाय पड़ोसन बाजरा, राम कसम बाजरा, तेरी कसम बाजरा।
जी का जंजाल मुआँ बाजरा लाया
जब इस बाजरे को छानन बैठी
उड़-उड़ जाय मुआँ बाजरा
राम कसम बाजरा, तेरी कसम बाजरा, अल्ला कसम बाजरा।
जी का जंजाल मुआँ बाजरा लाया
जब इस बाजरे को गूंथन बैठी
चिपक-चिपक जाये मुआँ बाजरा।
हाय पड़ोसन बाजरा, तेरी कसम बाजरा, राम कसम बाजरा।
जी का जंजाल मुआँ बाजरा लाया
जब इस बाजरे को सेकन बैठी
सड़-सड़ जाये मुआँ बाजरा
हाय पड़ोसन बाजरा, तेरी कसम बाजरा, राम कसम बाजरा।
जी का जंजाल मुआँ बाजरा लाया
जब इस बाजरे को खावन बैठी
फँस-फँस जाये मुआँ बाजरा
हाय पड़ोसन बाजरा, तेरी कसम बाजरा, राम कसम बाजरा।
जी का जंजाल मुआँ बाजरा लाया।

माने बोरलो घढ़ा दे रे ओ नन्दी के बीरा
थाने यूँ, थाने यूँ, थाने यूँ माथे पे राखूँ रे ओ नन्दी के बीरा।
माने चंदन हार घढ़ा दे रे ओ नन्दी के बीरा
थाने यूँ, थाने यूँ, थाने यूँ छाती पे राखूँ रे ओ नन्दी के बीरा।
माने बाजूबन्द घढ़ा दे रे ओ नन्दी के बीरा
थाने यूँ, थाने यूँ, थाने यूँ हाथों पे राखूँ रे ओ नन्दी के बीरा।
माने टिकड़ी घढ़ा दे रे ओ नन्दी के बीरा
थाने यूँ, थाने यूँ, थाने यूँ, माथे पे राखूं रे ओ नन्दी के बीरा।

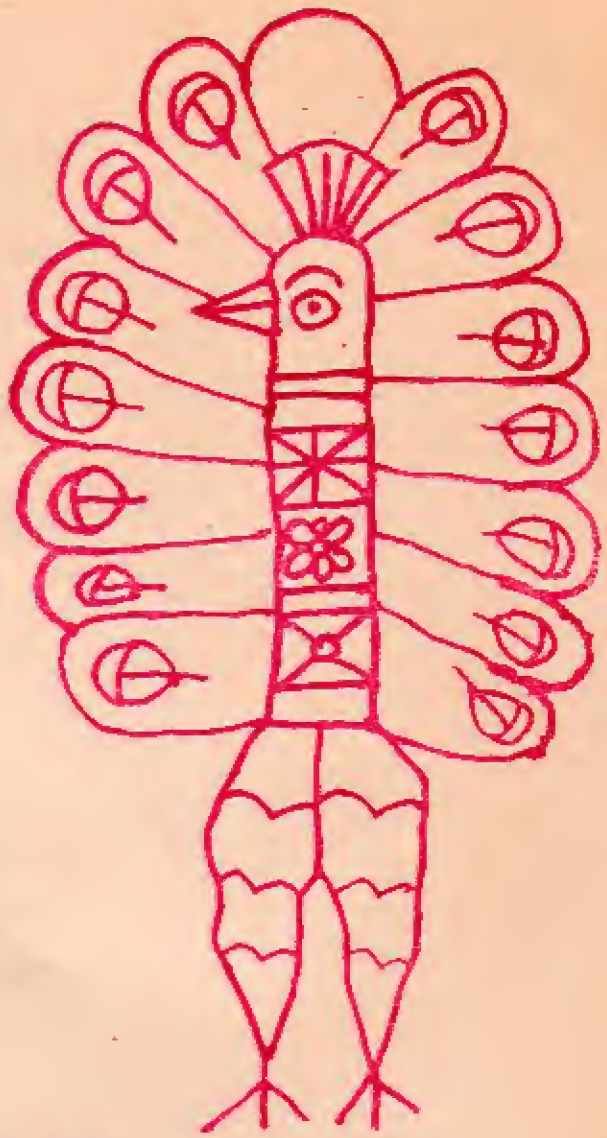

उड़ जा रे, कागा, कागा, कागा, कागा
उड़ जा रे।
खबर तो लया, खबर तो लया,
खबर तो लया म्हारे साजन की।
उड़ जा रे, कागा, कागा, कागा, कागा
उड़ जा रे।
नाम बताशा तने गाँव बताशा
रंग बताशा म्हारे साजन को।
उड़ जा रे, कागा, कागा, कागा, कागा
उड़ जा रे।
सूरजमल नाम रतनगढ़ गाँव
सांवरो है रंग म्हारे साजन को।
उड़ जा रे, कागा, कागा, कागा, कागा
उड़ जा रे।

(सायरा-बानो)

नीमड़ी तले री मैंने कब्जो सिमाओ, ऊपर तोता की निशानी
सर सर डोले रे जवानी, काई माँगे रे जवानी
लड्डू माँगे रे जवानी, बर्फी माँगे रे जवानी
सर सर डोले रे जवानी ।
नीमड़ी तले री मैंने घाघरो सिमायो, ऊपर तोता की निशानी
काई माँगे रे जवानी
जेवर माँगे रे जवानी ।
सर सर डोले रे जवानी ।

चाहे बिक जाये हरो रूमाल
बैठूँगी मोटर कार में ।
मोटर तो वाकी रंग बिरंगी
पहियो चक्कीदार,
बैठूँगी मोटर कार में ।
चाहे बिक जाय हरो रूमाल
बैठूँगी मोटर कार में ।
चाहे सास बिके चाहे ससुर बिके
चाहे बिक जाय हरो रूमाल
बैठूंगी मोटर कार में ।
चाहे जेठ बिके चाहे जिठानी बिके
चाहे बिक जाये ननद छिनाल
बैठूंगी मोटर कार में।

रंग रंगीली होली आई रे कि सागे भेज दे ।
ऊँट चढ़ी घबरावे लाडो सागे नाहीं भेजूं रे
रुन-झुन, रुन-झुन बल जुतादूं रे कि सागे भेज दे
वाह्वाह सागे भेज दे, हाँ हाँ सागे भेज दे ।
म्हारी लाडो नवा दिनां में नौ मन लाडू खावे रे
कि दस मन लाडू लाये मेलदयूं बैठी खावे रे
कि सागे भेज दे ।
ऊँट चढ़ी घबरावे लाडो सागे नाहीं भेजूं रे ।
रंग रंगीली होली आई रे कि सागे भेज दे
म्हारी लाडो नवाँ दिनां में नौ मन काजल घाले रे
कि दस मन काजल लाये मेलदयूं बैठी घाले रे
कि सागे भेज दे ।

कृष्ण कन्हैया हो, तुम्हारा रंग काला क्यों ?
काली रात में जन्म लिया था
इसलिए मेरा रंग काला है।
कृष्ण कन्हैया हो, तुम्हारा रंग काला क्यों ?
काली गाय का दूध पीया था
इसलिए मेरा रंग काला है।
कृष्ण कन्हैया हो; तुम्हारा रंग काला क्यों ?
कालें नाग का मथन किया था
इसलिए मेरा रंग काला है।
कृष्ण कन्हैया हो, तुम्हारा रंग काला क्यों ?

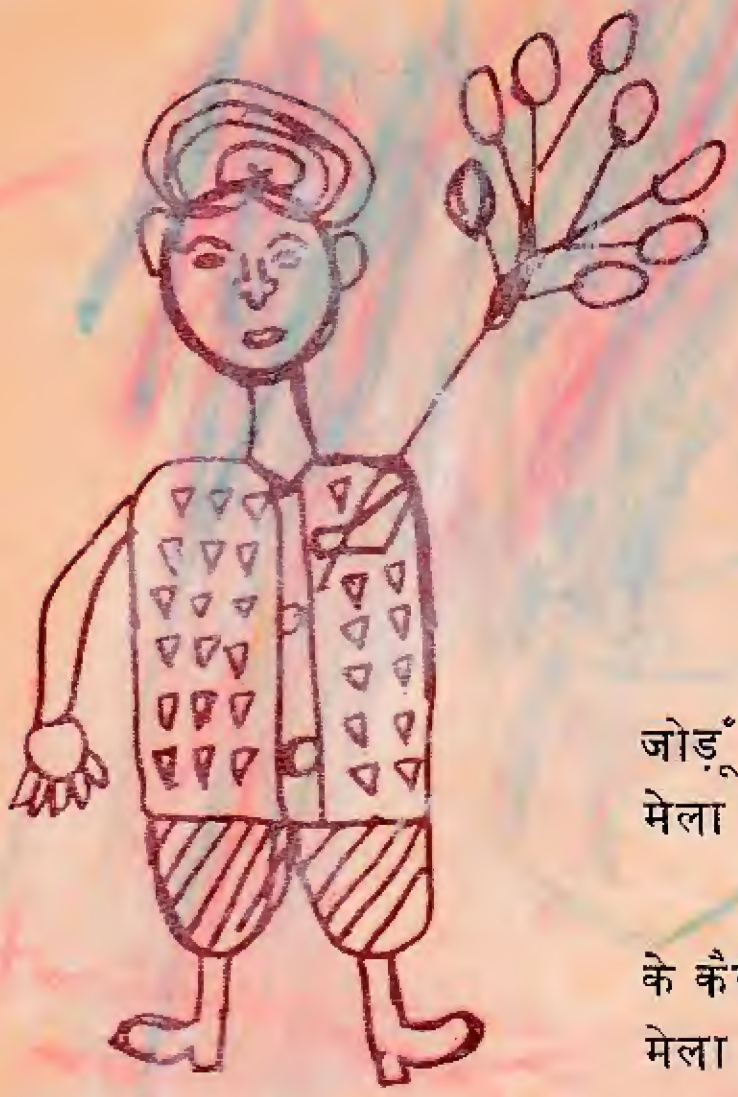

जोड़ूँ हाथ बलम मैं तेरे, मुख अपने से कह दे
मेला देखन जाऊं खरचबन पाँच रुपैया दे दे
पाँच रुपैया दे दे।

के कैरी म्हारी समझ न आवे, म्हारा दिल की प्यारी
मेला देखन जाया न करतो भला घराँ की नारी
भला घरां की नारी।

चंपा जाये चमेली जाये, मैं कैसे रुक जाऊँगी
पाँच आना की पाव जलेबी बैठ सड़क पर खाऊँगी
बैठ सड़क पर खाऊँगी।

लड्डू पेड़े और जलेबी सभी माल आ जाएँगे
अड़े के छोरे ऐसे हैं तनै छेड़-छेड़ के जायेंगे
तनै छेड़-छेड़ के जायेंगे।

ऐसी तो न भोली बलम जी, इनसे मात खा जाऊँगी
सौ सौ मारूँ जूत कसम से सौ सौ गाली दूँगी
सौ सौ गाली दूँगी।

गाली का वो बुरा न माने, पास तेरे आ जाएँगे
पास तेरे आ जायेंगे तनै अधर उठा ले जायेंगे
तनै अधर उठा ले जायेंगे।

क्यों तुम इतनी बात बनाओ, संग मेरे तुम होलो
मेला देखन जायें हम तुम पाँच रुपैया ले लो
पाँच रुपैया ले लो।

आभार

हम उन सब मित्रों के
आभारी हैं,
जिनके सहयोग से
इन गीतों का
संकलन हो पाया है।
मुख्यतः
यह गीत हमें
मौखिक रूप
से ही मिले हैं,
इसी कारण हमें इनके
मौलिक रूप व
इनके लेखकों की
जानकारी नहीं है।
इसीलिये हम
किसी को
व्यक्तिगत रूप से
धन्यवाद देने में
असमर्थ हैं।
इस भूल के लिये
हम क्षमा चाहते हैं
और
सब जाने अनजाने
सहयोगियों को
हार्दिक धन्यवाद
देते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली की सहायता द्वारा प्रकाशित।